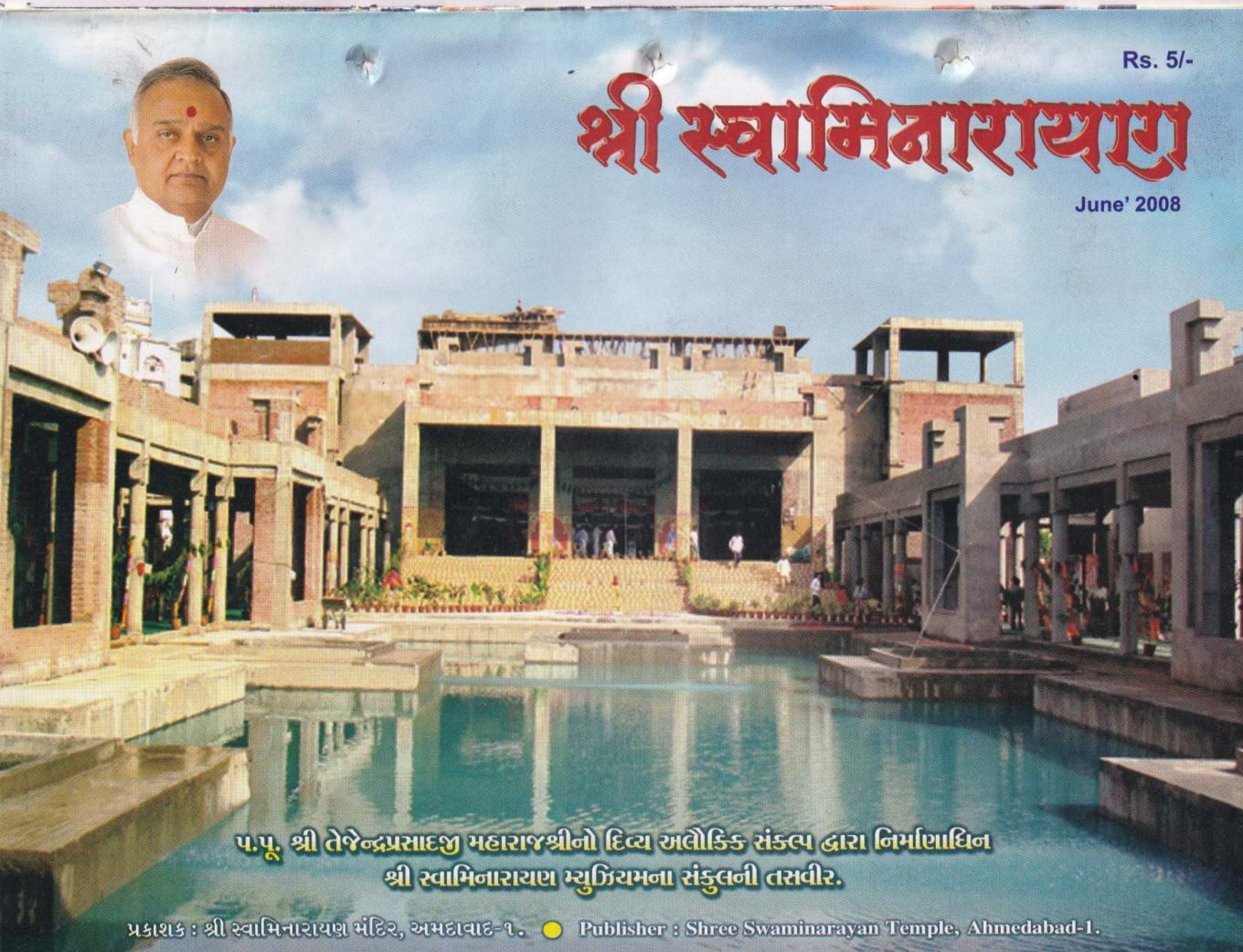
Rs. 5/-

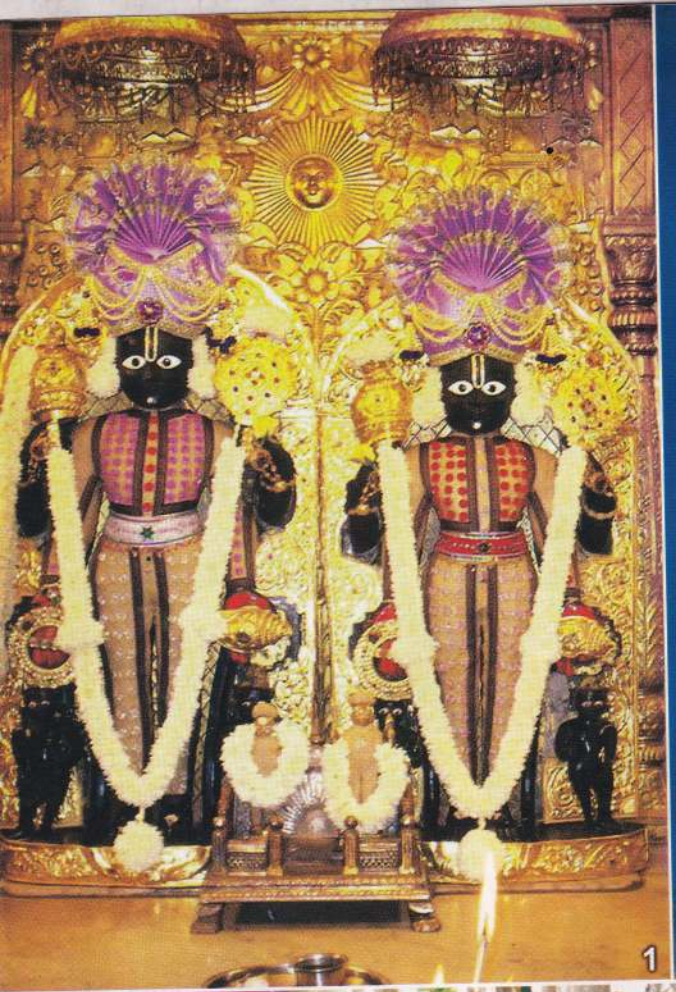
શ્રી સ્વામિનારાયણ

June' 2008



પ.પૂ. શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો દિવ્ય અલૌકિક સંકલ્પ દ્વારા નિર્માણાધિન
શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમના સંકુલની તસવીર.

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧. ● Publisher : Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1.







१-२. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद कालुपुर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव तथा बालस्वरूप घनश्याम महाराज के चंदन के वस्त्र का अद्‌भुद दर्शन ।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद (कालुपुर) के प्रसादी की सभा मंडप में श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा का श्रवण करते हुए भक्तगण ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम नारायणपुरा,
अहमदाबाद. फोन : २७४९९५९७,
९८२५३०९५९७ फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 अंक : 14 जून -2008

अनुक्रमणिका

१	अस्मदीयम	०२
२	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	०३
३	प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०३
४	हे युवानो !!	०४
५	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के दिव्य परिसर में संपन्न श्री विष्णुयाग	०५
६	मोह का माया जाल	०६
७	सरल वर्तन उत्तम कह लाता है	०७
८	वचनामृत में भक्त तथा श्रेष्ठतम भक्ति	०९
९	श्रीहरि के छठे, सातवें तथा आठवें वंशज के मुख से	११
१०	यज्ञ की व्याकुलता	१२
११	आनन्द की झड़ी	१३
१२	सत्संग बालवाटिका	१४
१३	भक्तिसुधा	१७
१४	प्रश्न पेटी ???	१९
१५	समाचार वृत्तांत	२०

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



तंत्रीश्री की तरफ से.....

भगवान जीव का कल्याण करने के लिये जब मनुष्य अवतार धारण करते हैं तब मात्र जो उनके एकांतिक भक्त होते हैं उन्हीं की सेवा स्वीकार करते हैं। भगवान अपने भक्त के महल में ही नहीं बल्कि माटी-गारा से बने कच्चे मकान में भी विराजमान रहते हैं। जो भक्त भगवान को प्रेम से धूप, दीव, नैवेद्य, पत्र, पुष्प, फल अर्पण करता है उसे भगवान स्वीकार करते हैं तथा अपना सेवक समझ कर दिव्यरुप पार्षदों के साथ मिला देते हैं। इसके साथ ही जो भक्त भगवान को जो-जो वस्तु अर्पण करता है, वह वस्तु भगवान के धाम में दिव्य हो जाती है। इन्हीं वस्तुओं को भगवान के धाम में वह भक्त दिव्यरुप होकर प्राप्त करता है।

भगवान मनुष्य शरीर धारण करके गाँव-गाँव, नगर-नगर जब विचरण कर रहे थे उस समय जिन भक्तोंने प्रीतिपूर्वक जिन वस्तुओं को अर्पण किया स्वयं प्रभु अपनी आवश्यकतानुसार मांग कर लिये, उन सभी का अपने जीवन में उपयोग किये वे सभी पदार्थ जैसे वस्त्र, पत्थर, काष्ठ अलंकार, वासन तथा पुस्तकें ये सभी दिव्य हो गयीं। इसके बाद परमात्मा प्रसन्न होकर चरणारविंद या मूर्तियों को जिसे प्रसाद रुप में दिये वे सभी दिव्यरुप हो गयी। जिस तरह भगवान का दिव्य स्वरुप वैसी ही उनके संबन्धमें आयी वस्तुओं का भी दिव्य स्वरुप है, वही सामार्थ्य दृष्ट होता है। महाराज के समकालीन जो संत महाराज से अलग होकर गांवो में सत्संग करने को तैयार नहीं होते, उन्हें महाराज अपने प्रसाद की वस्तु देकर सत्संग करने के लिये भेंजते। उस समय उन प्रसादी की वस्तुओं का दर्शन-स्पर्श करके महाराज के प्रगटपना का आनंद लेते थे।

श्रीहरि के २८ वर्ष के विचरण में असंख्य वस्तुयें प्राप्त हुई। इसमें से कुछ धर्मकुल की परंपरा की पूजा में हैं। कितनी तो मंदिरों में रखी गयीं। कितनी संतो की परम्परा में पूजा के रुप में प्राप्त हुई। कितने हरिभक्तों के घर में श्रद्धा के वशीभूत होकर महाराजने जो वस्तु दिये थे वे आज भी उपलब्धहै।

समय वीतते भौतिकवाद के आक्रमण से दिव्य वस्तुओं की मर्यादा का लोप दिखाई देने लगा। तब प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजीमहाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव गादी के छठ्ठे आचार्य के रुप में ३५ वर्ष तक सत्संग विचरण काल में प्रसादी की वस्तुओं को जो परिस्थिति देखी, उससे २००४ ई. में गादीपद से निवृत्ति लेकर सम्प्रदाय के अनमोल, अजोड़, अद्वितीय महाराज के प्रसादी की वस्तुओं के रख रखाव हेतु अहमदाबाद के नारायणपुरा विस्तार में श्री स्वामिनारायण म्युझियम का निर्माण कार्य स्वयं प्रारम्भ करवा दिया हैं। सुन्दर रमणीय तथा विशाल छ एकड़ जमीन में (डेढ लाख फूट चौरस जमीन में) सम्प्रदाय की अमूल्य प्रसादी की वस्तुयें रखी जायेंगी। जिसमें धर्मकुल की परम्परा में प्राप्त अमूल्य प्रसादी की वस्तुयें, महामंदिरो की तथा संतो या भक्तों के पास से स्वैच्छिक प्राप्त की गयी प्रसादी की वस्तुओं के दर्शन का लाभ मिल सकेगा। जिसमें आधुनिक ढंग से प्रसादी की वस्तुओं का रख रखाव किया जायेगा। इस भगीरथ पुरुषार्थ रुप महाप्रसाद का काम पूर्ण के कगार पर है। इस महान कार्य में सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण के प्रसादी की वस्तुओं के रख रखाव में जो सेवा करेंगे उन्हें भगवान के मनुष्यरुप में जिन लोगों ने सेवा का लाभ लिया था। उस सेवा का लाभ म्युझियम में सेवा करने वाले दाताओं को मिलेगा। इसलिये इस अपेक्षा के साथ भगवान के इस सेवा कार्य में लगजाना चाहिये। इस अमूल्य कार्य में आप सभी तन, मन, धन का सहयोग करके दिव्य प्रसादी की सेवा का दिव्य लाभ लेकर दिव्य हो जाय।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

-साधु नारायणस्वरुपदास का जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मई -२००८

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोडा (घनश्यामपुरा) ईडर देश रजत जयंती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघाड़ीनगर पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
३. श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा पारायण के प्रसंग पर पदार्पण।
४-५-६. श्री स्वामिनारायण मंदिर गोडपर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
७. श्री स्वामिनारायण मंदिर बजापर (जि. महेसाणा) पारायणकी पूर्णाहुति के प्रसंग पर पदार्पण।
८. श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
९. श्री अशोकभाई बाबूभाई पंचाल के यहाँ पदार्पण बापूनगर एप्रोच।
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री भरतभाई कानजीभाई मुलाणी के यहाँ पदार्पण जीवराजपार्क।
११. श्री स्वामिनारायण म्युझियम में आयोजित श्री विष्णुयाग की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण नारायणपुरा।
श्री स्वामिनारायण मंदिर बीलिया पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री मुकुंदभाई शंभुभाई पटेल द्वारा आयोजित सप्ताह पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण, एप्रोच-बापूनगर।
१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद (कालुपुर) में पारायण की पूर्णाहुति अपने हाथों से किये।
१३-१४-१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर नेत्रा (कच्छ) कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
१५-१६. जीरागढ (हालार मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर तथा जोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर के खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण।
१७ मोटी (मालवडा) ता. ध्रांगध्रा मूलीदेश श्री स्वामिनारायण मंदिर के मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
श्री भीखुभाई शंकरचंद प्रजापति के यहाँ भजन संध्या प्रसंग पर पदार्पण साबरमती।
१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर ऊँझा के पारायणकी पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।
१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२१. श्री अशोकभाई छोटालाल भावसार के यहाँ पदार्पण।
२२-२३. नारायणपर (कच्छ) पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
२४. श्री सोमाभाई मगनदास पटेल के यहाँ सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण शाहीबाग।
२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२६. धूलकोट (हालार-मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
२७. विराटनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदार्पण।
श्री प्रकाशकुमार बाबूलाल सुखड़िया के यहाँ पदार्पण निकोल-नरोडा।
श्री धीरुभाई वल्लभभाई सुखड़िया के यहाँ पदार्पण निकोल-नरोडा।
श्री विनुभाई बालचंद्रभाई डोलरिया के यहाँ पदार्पण।



प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

मई -२००८

४-५. श्री स्वामिनारायण मंदिर गोडपर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।
११. श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
सायंकाल श्री स्वामिनारायण म्युझियम नारायणपुरा श्री विष्णुयाग की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण।
१३-१४. नेत्रा (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।



हे युवानो !!

- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

गतांक में वांचे कि नदी में जब बाढ आती है गाँव के गाँव, नगर के नगर वह जाते हैं। यदिउस नदी के बाढ को रोकने के लिये बांधबनाकर योग्य दिशा दे दी जाय तो संसार में प्रकाश ही प्रकाश फैल जाय एवं चारो तरफ हरियाली की क्रांति आजाय। इसी तरह युवा शक्ति को भी सत्यमार्ग पर लेजाया जाय तो वह मोक्ष तक पहुँच सकता है। इसके लिये युवानअपने जीवन से आलस्य, निष्क्रियता, प्रमाद का त्याग करके सत्संग की सेवा में लग जांय तो उन्हीं का कल्याण नहीं होगा बल्कि सत्संग के साथ साथ सारे समाज का कल्याण होगा।

वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति का इतनी तीव्र गति से आक्रमण हो रहा है कि युवानो के संस्कार नष्ट होते जा रहे है, इससे आने वाली पीढी पर भयंकर तूफान आने की संभावना है। आज का युवान स्वतंत्र रहना चाहता है, अपने को शिक्षित मानता है और संस्कार के नाम पर एडवांस मानता हुआ मादक द्रव्यों का सेवन करने लगा है। अफीम, चरस, गांजा, कोकेन, मोरफिया, एल.एस.जी. पेथेड्रीन, तम्बाकू, गूटका, दारु, धूम्रपान जैसे व्यसनो को संस्कार मान लिया है। अरे ! आज के समाज में नई-नई व्यसन की रीति हुक्का पीने जैसे खराब कुटेव में फंस कर अपनी शक्ति की क्षमता को बरबाद कर रहा है। जिससे उसके जीवन का तन, मन, धन सभी चुसा रहा है। ऐसे घृणित तथा सर्वनाशी व्यसनो से छूटकर इस जीवन को सार्थक करने के लिये, इस लोक तथा परलोक को सुखी बनाने के लिये भगवान स्वामिनारायण के मूल सिद्धांतो में समर्पित एकांतिक संत-भक्तों के पास जाकर व्यवसाय नीति, व्यवहार शुद्धि, भगवान की भक्ति, सीखनी चाहिये। आज के समाज में तथा सत्संग में एकमात्र यही रास्ता है। युवा मित्रो ! जीवन में अनुकूल प्रतिकूल वातावरण तो आता रहता है, इसी में जीवन जीने की कला है। युवानी जीवन की मूल है। जितना मूल मजबूत होगा उतनी सुंदर हवेली मजबूत बनेगी। इसके साथ व्यवहार शुद्धि का भी बड़ा महत्व है।

सत्संग में आनेवाले नव युवानों को जो जगत संबंधी विषय में गुमराह हो गये हैं उन्हें सत्संग शिबिरों द्वारा क्रांति पैदा करके जागृत करने की जरुरत है। विवेकानंद स्वामी जैसे प्रेरणादायी सत्पुरुषो के जीवन का अनुकरण करके राष्ट्र तथा सत्संग की सेवा करनी है।

सत्संग में भविष्य के लिये आने वाले निर्णयो का सबसे बड़ा असर आने वाली पीढियों पर पड़ेगा। इसलिये युवान क्यों कार्यसील नही बने ? आज का युवा मित्र विकास एवं प्रगति के लिये समाज हो या सत्संग सतत तैयार बैठा है। परंतु सत्संग या समाज में विकास तभी संभव है जब युवान धर्म, नियम, आज्ञा, उपासना, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, संत महिमा, आचार्य, देव इत्यादि छ अंगो की महिमा को निष्ठा के साथ स्वीकार करके आगे बढे।

जिस प्रकार अपना भारत देश आज की दुनिया में अर्थशास्त्र की पकड़ अच्छी होने से शिर मौर्य बन गया है। इस में कारण एक मात्र युवान हैं। आई.टी.क्षेत्र में युवानों का महत्व का स्थान न होता तो महासत्ता का स्थान मिलना कठिन था। इसलिये प्रत्येक युवान अपनी अंतरात्मा को अवश्य पूछें कि सत्संग के लिए स्वामिनारायण सम्प्रदाय के मूल गादी संस्थान के आचार्य एवं संत तथा सत्संगी आपके लिये क्या नहीं किये हैं ? इसके साथ यह भी पूछें कि सत्संग के विकास के साथ मोक्ष प्राप्ति के लिये क्या प्रयत्न किया ?

इसलिये सत्संग की प्रगति करनी हो तो अपने जीवन में परिवर्तन लाना आवश्यक है। जीवन में परिवर्तन के लिये प्रयत्न की आवश्यकता होती है। इसके लिये शिक्षा की परमावश्यकता है। इस लिये उद्देश्य को साध्य करने के लिये सभी के विचारों का आदान प्रदान आवश्यक है।

हमे सर्वोपरि भगवान द्वारा स्थापित देव, मंदिर, आचार्य, शास्त्र, संत, सत्संगी मिले हैं तो भी हम इधर-उधर भटकते रहते हैं। दूसरे लोग हमारे भोलेपन का उपयोग करलेते हैं। इसलिये चिंतन की परम आवश्यकता है। युवा पीढी जागरुक होकर शास्त्र वांचन, संत समागम अवश्य करें, इसके साथ कार्यशील होकर सत्संग के हित के लिये युवक मंडल की स्थापना करके महीने-महीने गाँव-गाँव, शहर-शहर में सत्संग शिबिर करें। संतो का योग्य मार्गदर्शन लेकर सामाजिक स्तरपर सभा करके विकास के कार्य में लगजाना चाहिये। मात्र कागज में या भाषण में नही बल्कि क्रियान्वयन की आवश्यकता है। *(क्रमशः)*



श्री स्वामिनारायण म्युझियम के दिव्य परिसर में संपन्न श्री विष्णुयाग

समग्र विश्व में ही नहीं सारे ब्रह्मांड में जो दुर्लभ है वह सर्वोपरि परमकृपालु सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान ने जहाँ जहाँ विचरण किया या अद्‌भुत लीलायें की उस समय उपयोग की गयीं वस्तुयें जैसे शरीर के वस्त्रोपस्त्र, वासन, चरणारविंद, मूर्तियां, दातुन तथा स्वयं के हस्ताक्षर ये सभी यदि कहीं उपलब्धहै तो एकमात्र प.पू. बडे महाराजश्री के संग्रहालय में हैं। ये सभी वस्तुयें महान् अद्‌भुत - अलौकिक हैं, जो दुनियां की दृष्टि में अजायब के समान होगी, हम सभी का संकल्प म्युझियम जो महाराजश्री श्रीहरि के छठ्ठे वंशज या उन्हीं के अपर स्वरुप है उसे पूर्ण कर रहे हैं। ऐसे अलौकिक निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण म्युझियम में ता. ९,१०,११-५-०८ के दिन जिस प्रकार भगवान श्री स्वामिनारायण यज्ञ कराकर ब्राह्मणों को दान पुण्य करते और प्रसन्न कर देते उसी तरह अपने प.पू. बडे महाराजश्री को भी ऐसा संकल्प हुआ तथा उसका सुंदर आयोजन श्री स्वामिनारायेण म्युझियम के दिव्य परिसर में संपन्न किया गया।

ता. ९-५-०८ के शुभ दिन श्री विष्णुयाग का शुभारंभ हुआ। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य मरराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा अनेक संत मंडल एवं हजारों हरिभक्त उपस्थित थे। ३१ जितने प्रकांड पंडितो के वेद महामंत्रो की मंगल ध्वनि के साथ प.पू. बडे महाराजश्री स्वयं प्रथमवार एकाकी यज्ञ में विराजमान हुए। प.पूज्या बडी गादीवाळा अमेरिका थी। यथार्थ रुप से यह यज्ञ श्री स्वामिनारायण म्युझियम के भव्य परिसर में होने से इसका लाभ कौन नहीं लेगा। प.पू. बडे महाराजश्रीने इस महाकार्यक्रम को प्रकाशित करने के लिए मना किया था। परंतु संत-भक्तों को जैसे-जैसे समाचार मिलता गया वैसे-वैसे अकल्पनीय भीड़ बढती गई। यहाँ विष्णुयाग के अलावां दूसरा कोई आयोजन नहीं था। फिर भी प्रत्येक हरिभक्तों के मन में एसा था कि अपने जीवन में यह लाभ पुनः मिले या नहीं यह समझकर अविरत संख्या बढती गयी। यह यज्ञ प्रतिदिन प्रातः ९ से १ तथा सायं ३ से ६ बजे तक चलता, मंत्रनाद से चारो दिशायें भर जाती थी। ऐसी असह्य गर्मी में बडे महाराजश्री यज्ञ में विराजमान होकर रात्रि मे कीर्तन भक्ति के कार्यक्रम में भी समय से पधारते यह देखकर प.पू. बडे महाराजश्री के प्रति सभी भक्तों के मन में साक्षात् श्रीजी महाराज के दर्शन की प्रतीति होती थी। खूब प्रसन्न मुद्रा में झूले पर विराजमान ऐसे प.पू. बडे महाराजश्री का दूसरा कोई उदाहरण नहीं हैं। कार्यक्रम पूर्ण हो वहाँ तक सतत नंद संतो द्वारा रचित गीतों का रसास्वाद लेते थे। रात्रि के कार्यक्रम में श्री स्वामिनारायण म्युझियम का ग्राउन्ड छोटा पड जाता था। इतनी संख्या में भक्त लोग उमड पडते थे। ता. १०-५-०८ की रात्रि भक्ति कीर्तन कार्यक्रम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अधिक कार्यक्रम में व्यस्त रहने के कारण थके होने पर भी सुंदर श्वेत वस्त्र धारण करके जब पधारे उस समय संत-भक्तों के आनंद की सीमा ही नहीं रही।

ता. ११-५-०८ रविवार के दिन श्रीविष्णुयाग की पूर्णाहुति सायंकाल ६-०० बजे हुई उस समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य लालजी महाराजश्री भी पधारकर पूर्णाहुति में श्रीफल होमते हुए एवं आरती करते हुए श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपों का दर्शन करके भक्तजन अपने जीवन को सार्थक किये। ३१ पंडितों को प.पू. बडे महाराजश्री ने विविधउपहारों को देकर प्रसन्न किया। पंडित लोग भी अपने को भाग्यशाली मानने लगे कि हमारे जीवन में साक्षात् श्रीहरि के अपर स्वरुप के साथ "यज्ञ" का दिव्य लाभ मिला। यहाँ दर्शन के लिये आने वाले अनेकों हिरभक्तों से जो भी दान पुण्य किया गया है उसमें से यहाँ श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये एक पैसा भी

अनुसंधान पृष्ठ - १० पर...



मोह का माया जाल

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु स्वामी नारायणस्वरुपदासजी

श्रीजी महाराज गढड़ा के अंतिम के १८ वें वचनामृत में भरतजी के आख्यान को समझाते हुए कहे कि "अनंत प्रकार के पाप है, जिसमें भगवान के भक्त प्रभु के विना विषय पदार्थ में प्रेम करें तो यह सबसे बड़ा पाप हैं।

"महात्मा भरत का उदाहरण देते हुए सभी त्याग्राश्रमियों के लिये लाल बत्ती दिखाकर सावधान किये हैं।"

भरतजी मृगी के मायाजाल में धीरे-धीरे फंसने लगते हैं। परिणाम स्वरुप उसके प्रेम में इतना डूब जाते हैं कि प्रभु के स्मरण में कमी होने लगती है। प्रतिदिन सौ माला फेरने का नियम नष्ट होने लगा। सौ माला की जगह पचास, उसके बाद घटते-घटते दश तथा अंत में तो पांच पर आकर रुका, थोड़े समय बाद तो हाथ से जपमाला एवं गो-मुखी भी छूट गयी। मृग शावक उनके मन में पुत्र का स्थान ले लिया। बाद में उनके मन में रात दिन मोहन की जगह पर मृग शावक का चिंतन होने लगा। जो मुख एक समय रात-दिन प्रभु को प्राण प्यारे के रुप में पुकारता था वही आज मृग शावक को प्राण प्यारे के रुप में पुकारने लगा। कैसी मोह मयी माया है। इस प्रसंग से ख्याल आजायेगा।

ऐसे प्रपंचों में व्रत-नियम सभी छूट जाते हैं। जीव की एक समान स्थिति नहीं रहती। जितनी प्रगति उन्नति की तरफ जीवगति करता है, उतनी ही पतन की तरफ वह गति करता है।

शिथिलता नियमपालन में बाधक है। मन हर समय प्रमाद करने के लिये तत्पर रहता है। प्रमाद करने के लिये वह रास्ते ढूंढता रहता है। इस संसार के प्रवाह में बहते रहना जन्म जन्मान्तर से जीव का स्वभाव बना हुआ है। पतन की तरफ गति करना इसके लिये सरल है, लेकिन प्रभु प्राप्ति की तरफ गति करना कठिन है। ढाल की तरफ पानी बड़ी सरलता से बहने लगता है। लेकिन ऊँचे स्थल की तरफ पानी को बहाना कितना कठिन है।

एक बार नियम जब टूट जाता है तो उस मानव का धीरे धीरे एक-एक करके पतन होने लगता है। सदाचार के सोपान से एकबार भी जो गिरा वह चौरासी लाखयोनि के चक्कर में जाकर फंस जायेगा। बाद में उसकी अधोगति ही गति रहजाती है।

आशक्ति ही मोह का माया रुप है। अच्छे से अच्छे त्यागियों को रोगी बना देती है। बन्धन का मूल आशक्ति है। भरतजी मृग शावक को पानी में डूबने से बचालिये थे यह सत्कार्य है। लेकिन मृग शावक में अपना पन का भाव देखने लगे। मेरा मृग शावक कितना अच्छा है। मैं नही होता तो बिचारा मर जाता। यह अहंकार ही मोह का द्वितीय स्वरुप है। यही विचार उनके जप-तप, साधना, आत्मचिंतन को नष्ट कर दिया। अपने अनुकुल होते हुए भीलम्बे समय तक एकसाथ रहना हो तो मनुष्य के विचारों को कभी प्रतिकूल वातावरण झकझोर देता है। परिणाम स्वरुप उसे पाने के लिये व्याकुल हो उठता है। वह इस तरह स्नेहपाश में बधजाता है कि प्रभु दर्शन की प्यास बुझ जाती है।

दूसरे के मोह में फंस जाने से जीव की धोबी के कुत्ते की स्थिति न हो जाय, इसका सदा ख्याल रखना चाहिये।

समर्थ ज्ञानी भरतजी मृग शावक में इतना लिपट गये कि योग से भ्रष्ट होकर पुनः संसारचक्र में फंस गये। जैसे झंझावात में फसा जहाज सुरक्षित होकर किनारे आकर डूबने की जैसी स्थिति हो गयी। जिस में आसक्ति होती है वही चारो तरफ दिखाई देने लगता है।

तुच्छ कारणों के मोहवश होकर बड़े-बड़े महात्मा भी अपनी प्रतिष्ठा धूल में मिला दिये हैं। इसका उदाहरण आज भी इतिहास में भरापड़ा है। उस की दृष्टि में उसके जैसा प्रिय कोई अन्य नहीं लगता है। मन में वह मूर्ति ऐसी बैठ जाती है कि उस जगह पर अर्थात् मन में आशक्ति का इतना अधिक प्रभाव हो जाता है कि वहाँ प्रभु के चरण कमल की छाप

अनुसंधान पृष्ठ - ८ पर...



सरल वर्तन उत्तम कह लाता है

- साधु घनश्यामप्रकाशदास - जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

आइये मुक्तानंद स्वामी, आज किसकी रसोई है?

मुक्तानदं स्वामी : केशोदवाले दलीचंद शेठ की रसोई है महाराज!

महाराज : क्या बनाना है?

मुक्तानदं स्वामी : वैसे तो लड्डू, दाल, भात, शाग तथा कोई नमकीन कहे है, फिर भी आपकी जैसी इच्छा, सबकुछ परिवर्तित हो सकता है, कहिये आपकी क्या इच्छा है।

महाराज : तो शाग किसका बना रहे हैं?

मुक्तानंद स्वामी : आलू पडा है। इसके साथ और कुछ बनाना हो तो कहें।

महाराज : नहीं, आलू खा-खाकर थक गये है, अब तो? गुलाबी ठन्डी आ गई है, चातुर्मास का नियम भी खत्म हो गया है तो भन्टे का भरा हुआ शाग बनाइये न।

मुक्तानंद स्वामी : हाँ, हाँ, शाग का राजा भंटा है। छोटे - छोटे भंटो की सब्जी गजब की होती है। क्या स्वाद होता है। इस सब्जी के आगे तो दूसरी सब्जी का ख्याल भी नहीं आवे। भंटे का नाम स्मरण करते ही मिठाई का नाम लोग भूल जाते हैं। आज आप भंटे की सब्जी का नाम नहीं लिये होते तो शेठ की रसोई मजेदार नहीं बनती।

महाराज : ए तो ठीक यदि भंटा करछाने वाला आ गया तो तो .....

मुक्तानंद स्वामी : भंटा तो गरम करता है। कभी कभी तो करछाने वाला भी होता है। नि:स्वाद वाला भी आ जाता है। इसके सिवाय कोई अन्य शाग का नाम लीजिये महाराज।

महाराज : इस तरह क्यों बदल-बदल कर बोलते हैं स्वामी! आप स्थिर मति तथा जानकार संत है। स्थितप्रज्ञ हैं। तो क्यों आप भंटे के शाग की कभी प्रसंशा तो कभी निंदा कर रहे हैं। आपका मतलब क्या है कहिये।

मुक्तानंद स्वामी : शरणागत, आश्रित का अभिप्राय क्या! आपके अनुकूल सब अच्छा, अरुचिकर हमारा! आप जिसमें प्रसन्न हों उसी में हमारा कल्याण है। आपके रुचि के अनुकूल रहने में हमारा गौरव है। विचरण करते समय बैल गाडी के फंस जाने पर दरबार खींच लाये। दरबारगढ में प्रात: की निद्रा में विक्षेप होने से तलवारबाजी में चंद्र को मारडाला गया। इत्यादि प्रसंग में मन-बुद्धि से जिनका समर्पण भाव था ऐसे ब्रह्मानंद स्वामी महाराज के एक शब्द पर सर्वस्व त्याग कर अपार कष्ट उठाकर वडताल का मंदिर बनाकर आरती उतार कर महाराज की एक आज्ञापर वहाँ से भी छोड़कर चल दिये थे। अनाशक्ति भाव का यह एक मात्र उदाहरण हैं। स.गु. प्रेमानंद स्वामी को संगीत छोड़वाकर शास्त्र पढने की आज्ञा कर दिये।

शेखपाट गाँव के लालजी भक्त (निष्कुलानंद स्वामी) के पास जो मिठाई थी उसे ब्राह्मणों को दिला दिये और पैर के जूते में छिपाकर रखे रुपयों को चोरों से लुटवा दिये। उस समय भी क्या किसीने कोई दलील की। मात्र श्रद्धा के साथ समर्पण भाव ही वहाँ कारण था। किसी में परिवर्तन लाना, तो किसी को ऊपर उठाना या नीचे गिराना यह सब हरि की इच्छा से होता था। हठ, ईर्ष्या, मान हरि के आगे किसी का रुका नहीं। हाँ श्रद्धा, समर्पण, का भाव उत्तरोत्तर ऊपर उठता गया। उसे स्थान मिलता गया। भादर के मूलजी शर्मा महाराज की आज्ञा सुनते ही घर परिवार क्या खेत में से ही महाराज के पास पहुँच जाते हैं। घर छोड़कर आये हैं क्या? इतना सुनते ही घर की तरफ दौड़ पडे।

शरीर बहुत जल रहा है दूधपीने में आया है क्या? स्वप्न में आदेश की भ्रांति मात्र से जीवन भर गुणातीतानंद स्वामी दूधत्याग दिये। ए सारे प्रसंग क्या सूचित करते हैं? बड़े-बड़े संत भी अपने ज्ञान, मान का त्याग कर श्रीजी महाराज को पुरुषोत्तम जानकर उनकी शरणागति स्वीकार करके, उनके आधीन होकर, हाथ जोड़कर, हांजी-हांजी करके समस्त सत्संग को दासत्व भक्ति की प्रेरणा दिये हैं। ऐसे संतो को कोटिश: अभिवादन भी कम पड़ता है। उनकी दासत्व भक्ति

का स्मरण होते ही शरीर रोमाञ्चित हो उठता है। ऐसे भक्ति भाव को स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने भक्तिनिधिग्रन्थ में कविता के रुप में प्रस्तुत किया हैं -

सरल वर्तें घणु सारु रे मनवा,
सरल वर्तें घणु सारुं।
हाथ जोडी कही हाजी हाजी रे मनवा,
सरल वर्तें घणुं सारु....

अलभ्य सेवा का अवसर

सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्ण कृपा से तथा प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री तथा पूज्यपाद बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद एवं आज्ञा से सभी सत्संग समाज को ज्ञात हो कि स्वयं भगवान श्री स्वामिनारायण ने जिस भूमि पर सर्व प्रथम मंदिर का निर्माण कराकर स्वयं अपने बाहों में श्री नरनारायणदेव तथा स्वयं की मूर्ति प्रतिष्ठित करके अपने हाथों से मोक्ष मार्ग का प्रधान केन्द्र प्रस्थापित किया।

भगवान श्रीहरि के आज्ञानुसार स.गु. आनंदानंद स्वामी ने तीन शिखर वाला मंदिर का निर्माण करवाया है। इस मंदिर को आज करीब १८५ वर्ष पूर्ण हो रहा है। जिस में समय तथा संयोग के अनुसार जीर्णोद्धार करने की आवश्यकता हुई है। इस मंदिर के फ्लोरिंग में मारबल पत्थर लगाने की योजना है। मंदिर के अग्रभाग में छोटे-छोटे शिखर तथा मंदिर के चारो तरफ प्लींथ को भी बंसी पहाड़पुर वाले पत्थर की नवीनता से युक्त मजबूत एवं शिल्प शास्त्र के अनुसार सोमपुरा के मार्गदर्शन में जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस प्रसादी के मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य में अलभ्य सेवा का लाभ जीवन में पुनः नहीं मिलेगा। इसलिये इस सेवा से आप वंचित न रह जांय, अतः सभी हरिभक्तों को इस सेवा कार्य में सहयोग के लिये नम्र निवेदन है।

जिसकी धन राशी को श्री नरनारायणदेव की आफिस कालुपुर मंदिर में जमा कराकर पक्की रसीद प्राप्त कर सकते हैं। इस जानकारी के लिये प्रत्यक्ष मिलें या फोन द्वारा संपर्क करें।

लि. महंत स्वामी का जय श्री स्वामिनारायण

पृष्ठ ६ का चालुं...

दिखाई नहीं देती। बाद में तो स्त्री की प्रत्येक बात शहद से भी अधिक मीठी लगने लगती है। जिस पर वह आशक्त हुआ उसी के मोहमाया की पट्टी बधजाती है। जिससे वह मोहांधहो जाता है।

भरतजी का मृग झोपड़ी में से चला गया। यह जानकर जैसे किसी कृपण का धन लुट जाय और वह दुःखी होता है, जैसे एक ही पुत्र के मृत्यु से धनवान आघात का अनुभव करता है, जैसे दुधमुहांबालक माता की मृत्यु से पीड़ित होता है ठीक यही स्थिति असह्य वेदना का अनुभव उस मृग के वियोग में भरतजी कर रहे हैं। वह कहाँ गया होगा ? वह क्यों चला गया ? इस तरह के नाना विचार मन में करने लगे। प्रभु में चित्त नहीं लग रहा था। इस तरह करते हुए अंतकाल आ गया। मृत्यु के समय मृगी तथा मृगशावक का सम्पूर्ण चित्र मन में आगया था। जिससे उसी का चिंतन करते हुए शरीर त्याग किये।

"ज्यां वासना जेनी जरी रही है।"

"ते त्यां जई जन्म फरी धरे छे।"

इसीलिये वे हरिणी के रुप में जन्म लिये। कारण यह कि हरिणी में उनकी वासना थी। मूल धन के सामने व्याज वाली स्थिति हो गयी।

भरतजी के पिता ऋषभदेवजी स्वयं भगवान थे। वे राज्य वैभव छोड़कर वन में चले गये थे। वहाँ भी आसपास के कारण बन्धन में आये। मोह के मायाजाल में फंसे। जिससे तीन-तीन बारजन्म लेना पड़ा।

हम तो इस संसार के बीच में है। हम सभी में मृग शावक से भी अधिक प्रलोभन है। जो आशक्ति को उत्पन्न करने वाले हैं, तथा मोह को उत्पन्न करने वाले हैं। ऐसे कितने प्रलोभन है। इसलिये हमें और भी अधिक सावधान रहने की जरुरत है।

इसलिये आज इस शुभ अवसर पर श्री नरनारायणदेव के चरण कमल में प्रार्थना करें कि हमारे भीतर नित्य परमात्मा का वास रहे तथा जगत की वासना सदा के लिये हम सभी के वाह्यजीवन में भटकती रहे। जिससे हम अपने इस मानव जन्म को सार्थक कर सकें।



वचनामृत में भक्त तथा श्रेष्ठतम भक्ति

- सूर्यप्रकाशदास (वांकानेर जि. राजकोट)

स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत गढड़ा प्रथम प्रकरण के ४० वें वचनामृत में मुक्तानंद स्वामी के प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया -

श्रवणं कीर्तनं विष्णो) स्मरणं पाद सेवनम्।
अचनं वंदनं दास्यं सख्यमात्म निवेदनम्॥

इस प्रकार नवधा भक्ति का भगवान ने उपदेश दिया है। इन नवों प्रकारों से भगवान की भक्ति की जा सकती है। भागवत के तीसरे स्कन्धमें भगवान कपिलने भी नव प्रकार की भक्ति बताकर उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ, सतोगुणी, रजो गुणी, तमो गुणी इत्यादि अनेंकों प्रकार से भक्ति का रहस्य समझाया है। जिसमें सत्वगुणी भक्ति उत्तम कही गयी है। भक्ति सभी के लिये है। भक्ति बहुत सारे लोगों की - की जी जासकती है। माता की सेवा "मातृभक्ति", देवता की भक्ति देव भक्ति, ईश्वर की भक्ति ईश्वर भक्ति कही गयी है। लेकिन भगवान की भक्ति तथा भगवान के अवतारों की भक्ति सर्वोत्कृष्ट भक्ति शास्त्रों में कही गयी है। भक्ति शब्द में भज् धातु से क्तिन प्रत्यय हुआ है। भज्धातु का सेवा अर्थ है। अर्थात् स्नेहपूर्वक भगवान की सेवा करना । इसी को भगवान की भक्ति कहते हैं। नव प्रकार के भक्ति का वर्णन प्राय: मिलता है। परंतु दशवीं प्रकार की भक्ति का वर्णन संत लोग करते हैं - "प्रेमलक्षणा" भक्ति। भक्ति मार्ग में प्रेमलक्षणा भक्ति का अलौकिक स्थान है। जिस भक्ति को शुक, सनकादिक, नारद, गोपियां, मीरा, सूरदास, नरसिंह, ब्रह्मानंद, मुक्तानंद, प्रेमानंद, देवानंद इत्यादि संतो ने वर्णित किया है। प्रेमलक्षणा भक्ति से भगवान भक्त के आधीन हो जाते हैं। इसीलिये तो मुक्तानंद स्वामी अपने कीर्तन में गाया है -

प्रेम भक्ति जेने घर आवे तेहने रंग हरि राचे रे।
व्रजवनिता कर ताली बजावे नटवर थई थई नाचे रे।
मोटा मुनिवर देह दमीने आत्मदर्शन इच्छे रे।
पिंड ब्रह्मांड थी प्रीति तजे पण प्रेमनो राह न पीछे रे।
प्रेमनो मारग शुकजी पीछे कां पीछे व्रजनारी रे।
मुनि नारद रहे मगन प्रेमवश कां वृष भानुकुमारी रे।
मुक्तानंद कहे प्रेम तो मारग पीछे ते प्रभुजी ने प्यारा रे।

"प्रेमलक्षणा भक्ति" तो प्रभुजी को प्रसन्न करने का अमूल्य खजाना है। उसका प्रयोग कब, कहाँ करें, कैसे प्रभु की भक्ति उदित हो, क्या करने से प्रभु के भक्ति मार्ग में विघन न आवे । किस प्रकार किसकी भक्ति की जाय, सर्वोपरि तथा आत्यंतिक भक्ति किस प्रकार करें कि परम पद की प्राप्ति हो । इन सभी पर विशद चर्चा भगवान स्वामिनारयण ने वनचामृत में अनेकों जगहों पर किया है। भक्ति के हेतु को महाराज ने व.लो. नव वे में कहा है कि भक्ति एम उपजे जे जो भगवाननी वे विभूतिओ छे तेने जाणे ते केम जाणे तो खंड-खंड प्रत्ये भगवाननी जे मूर्तिओ रही छे तेनुं श्रवण करे तथा भगवान ना गोलोक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर, श्वेत द्वीप आदिक धाम छे तेने सांभणे तथा जगतनी उत्पत्ति, स्थिति प्रलयरुप जो भगवान की लीला उसे माहात्म्य के साथ सुने तथा रामकृष्णादिक जो भगवान के अवतार हैं उन अवतारों की कथा सुनने से भगवान की भक्ति उत्पन्न होती है।

संत समागम से भक्ति विशेष पुष्ट होती है। इसी वात की स्पष्टता महाराजने ग.प्र. २९ में की है। पवित्र देश में रहना चाहिये यदि कोई अच्छा आचरण न करता हो तो वहाँ से चला जाना चाहिये। जहाँ पर संत-साधु ब्रह्मवेत्ता हों वहाँ जागर सत्संग करना चाहिये। इस तरह करने से भक्त के भक्ति में वृद्धि होती है। ग.प्र. ५८ में महाराज कहते हैं कि जैसे जैसे किसी महा पुरुष के गुण ग्रहण करते जाते हैं वैसे-वैसे उसकी भक्ति पुष्ट होती जाती है।

भगवान के कल्याणकारी गुणों को जानकर परमेश्वर का ही दृढ आश्रय करना चाहिये, इसी का नाम भक्ति है।

उस भक्ति की रीति वताते हुए लक्ष्मीजी का दृष्टांत ग.म. १० वें में दिये और कहे कि जब समुद्र मंथन हुआ उस समय समुद्र में से लक्ष्मीजी निकली तथा वरमाला लेकर विचार करने लगी कि जिसका मैं वरण करना चाहती हूँ इस में किसी में गुण है तो रुप नहीं, जिसमे रुप है उसमें गुण नहीं। इस तरह वहाँ उपस्थित सभी देवता एवं दानव में दोष ही दिखाई दिया। बाद में उनके मन में एक मात्र भगवान ही निर्दोष तथा सभी सुखों के निधान दिखाई दिये, जिससे भगवान में दृढ भक्ति होगई। इसलिये कल्याण कारी गुण जिसमें हो ऐसे भगवान को जानकर उन्हीं में दृढ आश्रय करना ही भक्ति है। जो उत्तम भक्त होते हैं वे भगवान में अवगुण नहीं देखते, उनके प्रत्येक कार्य को चरित्र या दिव्यलीला मानकर गोपियों के भक्ति की प्रशंसा करते हैं। इसी वात को महाराज वनामृत में कहते हैं कि - दिव्य चरित्र हो तो पापी को भी उसमें दिव्यता का अनुभव होता है। लेकिन जब भगवान प्राकृत चरित्र करते हैं तो उसमें जिसे दिव्यता का अनुभव हो वही परमेश्वर का सच्चा भक्त है। इसी वात को गीता में भगवान कहते हैं -

जन्म कर्म च मे दिव्यं एवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥४-९॥

हे अर्जुन ! मेरा जन्म तथा कर्म दोनो दिव्य है, इसे जो दिव्य जानता है वह देह त्याग कर जन्म नहीं लेता, वह मुझे ही प्राप्त करता है। इसलिये जब भगवान चरित्र करते हैं तो भक्त-अभक्त दोनो को दिव्य लगता है। लेकिन जब भगवान मनुष्य रुप धारण करके प्राकृत-चरित्र करते है, उस समय जिसे दिव्यता का अनुभव होता है तथा भगवान के चरित्र में न्यूनता का अभाव नहीं आता, ऐसी जिसकी निर्मल बुद्धि हो गयी है वही परमात्मा का श्रेष्ठ भक्त है। ऐसी जो भक्ति करे वही भक्त कहा जायेगा। इस तरह जैसे गोपियां भगवान की भक्त थीं वे कभी भगवान का अवगुण नहीं लीं। लेकिन राजा परीक्षित तो गोपियों की वात सुनकर ही भगवान का अवगुण लिये। बाद में शुकदेवजी महाराज भगवान का सामर्थ्य दिखाकर उनके भीतर का दोष निकाल दिये। इसलिये भगवान जो भी चरित्र करते हैं वह सब गोपियों की तरह दिव्य भाव जानकर अवगुण नहीं लेते। ऐसी भक्ति महादुर्लभ है। ऐसी भक्ति जन्मजन्मान्तर के अभ्यास से मिलती है। अनेकों जन्मों के शुभ संस्कार जब एक साथ होते हैं तभी गोपियों की तरह भक्ति उदित होती है। ऐसी भक्ति होने पर परम पद की प्राप्ति होती है। ऐसी भक्ति-ज्ञान वैराग्य से भी अधिक है। जिसके हृदय में ऐसी भक्ति हो उसके लिये भगवान की प्रीति में कोई कमी नहीं रहती। (ग.म.१०)

पृष्ठ ५ का चालुं...

उपयोग में नहीं लेना है, ऐसी प.पू. बडे महाराजश्रीने आज्ञा की थी। जिससे सभी रकम गाय के घासचारा के लिये अर्पण कर दी गयी थी।

यह विष्णुयाग सतत तीन दिन तक चला जिसने इसका दर्शन किया उसे २०० वर्ष पूर्व के इतिहास का स्मरण हो आया। जैसे प्रत्यक्ष श्रीजी महाराज यज्ञ में विराजमान होकर दर्शन दे रहे हों। सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव देश के हरिभक्तों को ऐसे अलौकिक दर्शन का लाभ मिला। जिन्होंने यह दिव्य दर्शन किया उसका मोक्ष का मार्ग खुल गया। ता. १२-५-०८ के दिन बडे महाराजश्री की तरफ से अहमदाबाद मंदिरमें ठाकुरजी की रसोई तथा संत-वर्णी एवं पार्षदों की भी रसोई थी। स्वयं संतो को भोजन परोसकर श्रीजी महाराज की तरह हंस हंस कर संतो को भोजन कराकर तृप्त करके दक्षिणा भी दिये थे।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के श्री विष्णुयाग में सतत तीनो दिन तक दोनों समय बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये तथा यज्ञ दर्शनार्थ प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा श्रीराजा भी पधारती थीं।

प.पू. बडी बहनजी, पू.श्रीरतनबाबू तथा बनारस से पू. मामाजी भी इस प्रसंग में उपस्थित थे। समस्त प्रसंग में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा गाँव से आये हुए अनेकों हरिभक्त इस महायज्ञ में येनकेन प्रकारेण सेवा करके श्रीहरि के अपर स्वरुप की प्रसन्नता प्राप्त किये है।

- संदीपभाई चोकसी



श्रीहरि के छठे, सातवें तथा आठवें वंशज के मुख से

संकलन - गोरधनभाई वी. सीतापरा (बापुनगर)

कालुपुर श्री नरनारायणदेव के १८६ वें पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री :

श्री नरनारायणदेव की जितनी महिमा समझिये उतनी कम है। युनिवर्सिटी ग्राउन्ड पर जब द्विशताब्दी महोत्सव मनाया जा रहा था, तब डोंगरेजी महाराज ऐसा बोले थे कि हम ऐसे उत्सव लाखों रुपये खर्च करके मनाते हैं। इसलिये श्री नरनारायणदेव के समक्ष मंदिर में भजन न करके वेद पाठ करवाना ठीक है। इसलिये उस समय भारत भर से उच्च कोटि के वेदपाठी विद्वान ब्राह्मणों को बुलाकर श्री नरनारायणदेव के समक्ष सतत ८ दिन तक वेद पाठ कराया गया था। उसी अंतराल में लालजी महाराज के यज्ञोपवित संस्कार के उपलक्ष्य में डोंगरेजी महाराज को आमंत्रित किया गया था, उस समय भी डोंगरेजी महाराजने सभा में कहा था कि सर्व प्रथम लालजी महाराज को श्री नरनारायणदेव का दर्शन कराइयेगा। इस रहस्य को विद्वान पुरुष भी जानते हैं। श्री नरनारायण देव की महिमा का कोई अंत नहीं है।

इस रहस्य को जब अन्य समझ सकते है तो हमें क्यों नही समझना चाहिये। इसी रहस्य को समझाने के लिये मैंने षष्ठि पूर्ति महोत्सव प्रसंग पर "वचनामृत में श्री नरनारायणदेव" नाम की पुस्तक लिखी है। जिसका प्रतिदिन २ से ३ पेज प्रत्येक हरिभक्त वांचन करें। पुस्तक बहुत छोटी है। परंतु श्री नरनारायणदेव की महिमा को समझने के लिये बहुत उपयोगी है।

महाराजने प्रथम के ४८ वें वचनामृत में प्रत्येक हरिभक्त को श्री नरनारायणदेव की मूर्ति पूजा में रखने की आज्ञा की है। ऐसा नहीं कि श्री लक्ष्मीनरायणदेव देश के हरिभक्त श्री लक्ष्मीनारायणदेव की मूर्ति को पूजा में न रखें । श्री नरनारायणदेव देश के सत्संगी मात्र को महाराज ने कहा है कि वे मूर्तियां श्री नरनारायणदेव ही है। ऐसा जानकर कभी मूर्तियों को अपूजित नही रखना चाहिये । महाराजने पूजा के अंत में श्री नरनारायणदेव के पास मांगने के लिये सिखाया है कि महाराज ! हमें सत्संग के बीच में रखियेगा, जो सत्संग से बाहर फेंक दे ऐसे तत्व से हमारी रक्षा कीजिये।

तीन प्रकार के मानवों में से दो पर हमें बहुत दया आती है। दुःख तो यह होता है कि महाराज तो उन्हें मिले हैं परंतु सुख नहीं ले सकते। क्योंकि वे श्री नरनारायणदेव के सुख से वंचित हैं। प्रथम प्रकार के मानव रावण जैसे है। रावण को राम मिले, पर रावण भगवान के रुप में नहीं मानता था। परंतु काम, क्रोध, अहंकार, अभिमान, मान इत्यादि अंतःशत्रुओं के वशीभूत होने से राम का सुख नहीं लेसका। बल्कि उनके साथ वैर कर लिया। रावण वेहोश स्थिति में था। दूसरे प्रकार के मनुष्य कुंभ कर्ण जैसे होते हैं। कुंभकर्ण को भी राम मिले परंतु निंद्रा, आलस्य, प्रमाद, के कारण राम का सुख नहीं प्राप्त कर सका। यह मूर्च्छित अवस्था में था। तीसरे प्रकार के मनुष्य विभीषण जैसे होते है। विभीषण का जन्म राक्षस कुल में हुआ था तो भी राम की शरणागति स्वीकार करके राम का सुख लिया। वह सभान अवस्था में था। इसलिये सभी लोग श्री नरनारायणदेव का सुख लेने के लिये सदा सभान रहा कीजिये।

प.पू. लालजी महाराजश्री : हम अपने पाकीट में महाराज का फोटो रखते हैं। एक दिन हमारी टीचरने पूछा यह आप किसका फोटो रखते हैं ? तो हमने कहा कि यह स्वामिनारायण भगवान का फोटो है। तब शिक्षिका ने कहा कि स्वामिनारायण भगवान की कोई पुस्तिका है ? हमने कहा हाँ बहुत सारी पुस्तके हैं। हम उन्हें शिक्षापत्री तथा वचनामृत दो पुस्तक दिये। वे उन दो पुस्तकों को वांचा। उसके बाद से वे "जयश्री स्वामिनारायण" बोलने लगीं। इसके पहले वे कभी "जयश्री स्वामिनारायण" बोलती नहीं थी। इस तरह अपनी पुस्तकें मनुष्य को सत्संगी बनादें इतनी ताकत है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री : हम सभी को महाराज मिले हैं श्री नरनारायणदेव मिले हैं। इससे बड़ी कोई प्राप्ति नहीं। इससे बडा कोई सुख नहीं हैं। हम जो श्वांस लेते हैं इसमें भी महाराज की कृपा है। पुरुषार्थ करने से बंगला, गाडी बहुत कुछ मिल सकता है, परंतु खूब पुरुषार्थ करने के बाद भी ऐसी प्राप्ति नहीं होती। हमें अनायास ही महाराज की अहैतुकी कृपा प्राप्त हो गई है। आरती में हम गाते हैं - "अडसठ तीरथचरणे कोटि गया काशी।" तो इसीका सदा स्मरण बना रहना चाहिये। *(क्रमशः)*



यज्ञ की व्याकुलता

- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

वैशाख का पांच दिन शेष रह गया तो सभी लोग जेतलपुर से खोखरा अहमदाबाद आये । श्रीहरि मेवाडा ब्राह्मण नथुभट्ट के घर रुके । संत कांकरिया तालाब के किनारे रुके । तालाब में स्नान करके भगवा वस्त्रों को भूमिपर या वृक्षों पर सुखाने के लिये लटका दिये । उस समय वहाँ की शोभा अलौकिक लग रही थी । भगवान श्रीहरि संत-भक्तों के साथ वार-वार निर्मानीपना की बात करते थे । लेकिन इस रहस्य को कोई समझ सका नहीं । एकादशी की सुबह में छोटे भाई को बुलाकर कहे कि आज एकादशी है पांच मन पेडा ले आइये । छोटे भाई कहते हैं कि हे महाराज ! इतना अधिक पेडा की क्या जरुरत ? दो मन पेडा तो पर्याप्त है । श्रीहरिने कहा आदमी तो बहुत हैं । हमें तो लग रहा है कि पांचमन पेडां भी कम पडेगा । आप दश मन पेडा मंगवाइये । इसके अलांवा बरफी, बताशा, केला, आम इत्यादि जो मिले उसे भी लाइयेगा । अगल-बगल के गाँव में भी जाइयेगा । ऐसा अवसर पुनः नहीं मिलेगा । छोटे भाई आज्ञानुसार सभी वस्तु ले आये । श्रीहरि स्वयं संतो को, हरिभक्तों को, अभ्यागतों को, खूब पेटभरकर फलाहार कराये । बाद में कहने लगे आज मैं श्रेष्ठ यज्ञ किया हूँ । पुनः हो या न हो क्या ठेकाना, इस तरह रहस्य मय वात किये ।

द्वादशी के दिन वहाँ पर हजारों असुर आये । वैरागी वेश धारण किये । अहमदाबाद तथा कांकरिया के बीच तंबू का डेरा डाल दिये । इन तंबुओं में, छूरा, कटार, तलवार, त्रिशूल, बंदूक, परशु, बरछी इत्यादि नाना आयुधछिपाकर रख दिये । बाद में उनके भयंकर रुप दिखाई देने लगे । कोई चिमटा बजाता तो कोई तलवार नचाता, कोई बरछी दिखाता, वे सभी मदिरापान करके चारो तरफ घूमते हुए कहते कि स्वामिनारायण में शक्ति हो तो पुनः यज्ञ करके बतावें ।

उसी समय योगानंद स्वामी, चिद्रुपानंद स्वामी, कल्याणानंद स्वामी, अरिहंत्रानंद स्वामी ये चार संत झोली मांगकर आ रहे थे । वे वैरागी इन संतो को धरदबोचे । मारते-मारते उन्हें जहाँ लकडी काट रहे थे वहाँ लेगये । इन चारो साधुओं के माथे पर लकड़ी का बोझा रख दिये और बैल की तरह पीछे से मारते हुए अपने निवास स्थान पर ले गये । संतो के शरीर से रक्त निकलने लगा था । निःसहाय तथा निराधार ऐसे वे साधु श्रीहरि का स्मरण करते हुए सेवा करने लगे । उसी समय वहाँ से साधुओं का टोला निंकला उसमें से किसी साधु को दया आई, उसने कहा क्यों ऐसे संतो से ऐसी सेवा करा रहे हो । इन्हें छोडदो वीर हो तो इन्हें नहीं इनके शरताज को पकड़ो । फिर भी वे छोडे नहीं ।

वैरागी चार संतो को लेकर गोमतीपुर की तरफ गये है ऐसा समाचार लालदास गोरा को मिला । वह वैरागियों की छावनी में गया और कहने लगा आप सभी को हम खिलाना चाहते हैं कितना सिद्धा सामग्री लगेगी, उस अनुपात में मैं माल समान भेजूं । महंत प्रसन्न होगया । वह बाहर तक छोड़ने गया, वहाँ रास्ते में चारो संतो को देखा तो कहा क्यों इन्हें पकड़ रखे हो ? छोड़ दो । वह महंत तो लालदास के अधीन हो चुका था, इस लिये छोड़ दिया । योगानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, कल्याणानंद इत्यादि चारो संत श्रीहरि के पास आये । उनके मुख पर व्यथा थी । उनके शरीर की चोट देखकर श्रीहरि द्रवित हो उठे । बड़े प्रेम से पास बुलाकर कहे कि यह दशा मेरे संतो की किसने की ? महाराज की भ्रुकुटी चढ गई बडे क्रोधमें शरीर जलने लगी, कुछ बोले नहीं । थोड़ी देर के बाद शांत होने पर बोले आप सभी मेरे सुख के अधिकारी हैं । जहाँ नीति विना का राजा हो वहाँ आप लोग नहीं रहना । आप लोग यहाँ से सुरत चले जाइये । वहाँ नीतिवाला राजा आया है । आप सभी की वह रक्षा करेगा । आप सभी निर्मानीपना नहीं छोडियेगा । यहीं आपके विजय का हथियार है । ऐसी

अनुसंधान पृष्ठ - १८ पर...



आनन्द की झड़ी

मूर्ति दिखाई देती है ?

- शा. हरिजीवनदास

एक दिन परमब्रह्म श्री स्वामिनारायण भगवान मस्तक के ऊपर वस्त्र ओढकर मानसी पूजा कर रहे थे । शांत सुंदर वातावरण था । वहाँ पर कोई नहीं था । उसी समय ब्रह्मानंद स्वामी आये । स्वामी बोले "महाराज ! आप ध्यान करते हैं तब भगवान की मूर्ति दिखाई देती है ? हमे तो ध्यान में मूर्ति नही दिखाई देती । आपको दिखाई देती है मूर्ति बताइये प्रभु !"

श्रीहरिने विचार किया ब्रह्मानंद स्वामी हमे ध्यान नहीं करने देंगे । इसलिये मस्तक पर ओढा हुआ वस्त्र इस प्रकार दूर किया जैसे पुजारी पर्दा हटाता है और प्रभु के रमणीय रुप के दर्शन होते है । वाह प्रभु वाह ! ब्रह्मानंद स्वामी बोल उठे । अब हमे तो भगवान की मूर्ति दिखाई दी । चलो दर्शनीय मूर्ति के दर्शन के लिये पधारो । यह अमूल्य लाभ नही मिलेगा । ब्रह्मानदं स्वामी इस प्रकार खुद हँसते रहे और महाराज को भी हँसाते रहे।

"प्रेत कौन ?"

"अरेरे आप तो एकदम निर्बल हो । इतना उठा नही सकते ! एक तो हमने तेरह दिवस से अन्न नही खाया तो हमारा वजन कितना होगा ।"

वरजांग में श्रीहरि बिमार हुए पश्चात ठीक होते ही प्रभु गढड़ा पधार रहे थे । भक्तजन प्रभु को डोली में उठाकर ले जा रहे थे । तथा महाराज की शरीर में बहुत भार लगा भक्तजनो ने डोली नीचे रख दी तब महाराज ने ऊपर के शब्द कहे । पश्चात डोली उठाने वालो की थकान दूर करने के लिए गुड खिलाया ।

श्रीहरिने भगुजी को कहा जाओ गढड़ा से गाडी ले आओ । साठ गांव चल कर भगुजी गाडी लाये साथ में सोमलाखाचर तथा पार्षद लोग आये । गाडी में बैठकर महाराज करीयाणी गाँव पधारे, दरबारगढ में भोजन किया, और सभी भक्त पार्षद को भोजन के लिये आदेश दिए ।

"सभी योग्य प्रकार से भोजन लिए ?" महाराजने पूछा फिर भक्त बोले "सभीने भोजन किया सिर्फ भगुजी तथा जेहाजी बाकी रह गये है । उत्तर सुनकर महाराजने मजाक उडाया कि ये दो जन बाकी है तो भोजन किसने किया ? ये दोनो तो प्रेत है । इनके लिए और आंटा पीसवाओ और रोटी बनवाओ तथा दाल भरवाओ तब इन दोनो का पेट भरेगा । यह बोलकर महाराज दोनो लोगों के सामने देख कर कहे "प्रेतो थोडा ही भोजन करना" यह बोलकर महाराज हंसने लगे ।

निश्चय बगैर का भक्त हो तो प्रभु की यह वाणी सुनते ही कंठी टूट जाय ।

आपणा व्रत-उत्सव

જેઠ સુદ-૧૧ શનિવાર તા. ૧૪-૬-૦૮	નિર્જળા એકાદશી ઉપવાસ, સર્વોપરિ છપૈયાધામમંદિરનો પાટોત્સવ.
જેઠ સુદ-૧૨ રવિવાર તા. ૧૫-૬-૦૮	ઈડર મંદિરનો પાટોત્સવ
જેઠ સુદ-૧૫ બુધવાર તા. ૧૮-૬-૦૮	મુકુટોત્સવ પૂનમ, અમદાવાદ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં શ્રી નરનારાયણદેવને કેશર સ્નાન
જેઠ વદ-૧૧ રવિવાર તા. ૨૯-૬-૨૦૦૮	યોગીની એકાદશી ઉપવાસ.
જેઠ વદ-૧૨ સોમવાર તા. ૩૦-૬-૦૮	વડનગર મંદિર પાટોત્સવ.
અષાઢ સુદ-૨ શુક્રવાર તા. ૪-૭-૦૮	રથયાત્રા દર્શન
અષાઢ સુદ-૪ રવિવાર તા. ૬-૭-૦૮	અયોધ્યા મંદિર પાટોત્સવ.
અષાઢ સુદ-૧૨ સોમવાર તા. ૧૪-૭-૦૮	દેવશયની એકાદશી ઉપવાસ, ચાતુર્માસના નિયમલેવા.
અષાઢ સુદ-૧૫ શુક્રવાર તા. ૧૮-૭-૦૮	મુકુટોત્સવ પૂનમ, ગુરુ પૂર્ણિમા, કાલુપુરશ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીનું પૂજન-અર્ચન
અષાઢ વદ-૨ રવિવાર તા. ૨૦-૪-૦૮	શ્રી ઠાકોરજીને હિંડોળે ઝુલાવવા
અષાઢ વદ-૧૦/૧૧ સોમવાર તા. ૨૮-૭-૦૮	પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો પ્રાગટ્યોત્સવ અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી અને પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની શુભ નિશ્રામાં ધામધૂમથી ઉજવાશે.



सत्संग बालपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

आरती के पदों की अद्‌भुत कथा

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

मित्रो ! छुट्टियों में कितनी मजा आती है ? कोई चिंता ही नहीं बस खेलना तथा घूमना । मात्र दो महीने की छुट्टी आती है । ज्यों छुट्टी पूरी हुई की बकरी डिब्बे में आ जाती है । वही पढना, स्कूल जाना, ट्यूशन जाना प्रारम्भ हो जाता है ।

मित्रो ! यह तो जगत के बालकों की बात हुई । लेकिन जो भक्त बालक हैं उनकी तो बात ही अलग है । वे तो छुट्टी में अच्छी-अच्छी वातें सीखते हैं, घर में कुछ मदद करते हैं । प्रतिदिन मंदिर जाते हैं, सेवा करते हैं, कीर्तन, प्रार्थना, आरती इत्यादि कुछ धार्मिक बात सीखते हैं । तो आप भी इस छुट्टी का उपयोग कुछ अच्छेकार्य में कर सकते हैं । मंदिर में सायंकाल जांय तो वहाँ आरती, चेष्टा, अष्टक में अवश्य भाग लें । वैसे अपने संप्रदाय की आरती तो प्रायः सभी को याद होती है । चाहे छोटा बालक हो या वृद्ध हो सभी को आती है । तो आपको भी आती होगी । प्रतिदिन प्रातः सायं घर में या मंदिर में आरती बोलते ही होंगे । आरती के रचयिता मुक्तानंद स्वामी हैं । यह भी आप जानते हैं । आरती में बहुत सारे भाव समाये हुए हैं । तो आप सभी आरती का अर्थ समझो ? मजा आएगा । पहले साथ में आरती का प्रथम पद बोलते हैं -

जय सद्‌गुरु स्वामी, प्रभु जय सद्‌गुरु स्वामी,
सहजानंद दयालु बलवंत बहुनामी, जय सद्‌गुरु.

बहुत सुन्दर आप सभी लोग आरती के प्रथम पद को बोले । अब इसका अर्थ समझिये । मुक्तानंद स्वामी के हृदय का यह भाव परमात्मा के लिये समर्पित होकर प्रगट हो गया । स्वामी स्वयं सर्व प्रथम आरती प्रगट कर स्वामिनारायण भगवान की आरती उतारते हैं । हे दयालु ! हे बलवंत ! हे बहुनामी ! आपका जय जयकार हो । बलवंत अर्थात् सभी शक्तियों का स्वामी । बहुनामी अर्थात् भक्त को जिस नाम में प्रेम हो, भाव हो उसी नाम से पुकारे, उसी नाम से भक्त की भक्ति को स्वीकार करते हैं । प्रभु के एक या दो नाम नहीं बल्कि बहुनाम हैं । अर्थात् हजारों नाम है । दयालु शब्द प्रथम क्यों कहे, इस पर विचार करना चाहिये । आप भले ही कितने चालांक हो, धैर्यशाली हों, परंतु आपके कार्य में कोई शंका करे तो आपको अवश्य क्रोधआयेगा । थोडा समझाने का प्रयास करने परभी, बाद में क्रोधतो आयेगा ही । मुक्तानंद स्वामी दयालु शब्द पहले प्रयोग किये हैं । कारण यह कि स्वामी को समाधिप्रकरण में शंका हुई थी । फिर भी प्रभु हमारे ऊपर क्रोधनहीं किये । हे प्रभु ! इस समय आपने क्या किया ? अब हमें विश्वास हो गया कि आपके चरण में आकर जो गिर गया तो उसका काम हो गया । इसलिये मैं आपके चरण पकड़ता हूँ ।

मित्रो ! प्रथम पद का अर्थ समझगये न ! अब दूसरे पद को बलते हैं ।

चरण सरोज तमारु वंदू कर जोडी,
चरणे शीश धर्या थी दुःख नाख्या तोडी .... प्रभु.

हे प्रभु ! चरण सरोज, सरोज अर्थात् आपके चरण कमल की मैं वंदना करता हूँ । जिसने इन चरण कमलों का वंदन किया, मस्तक अर्पण किया, उसके दुःख खड़े नहीं रहते । प्रभु की कृपा से वे दुःख दूर हो जाते हैं । भागवत में एक कथा आती है । यमराजा अपने दूतों से कहते हैं कि जो भगवान के चरण में मस्तक झुकाया हो या एकबार भी भगवान का नाम लिया हो तो उसे यमपुरी में नहीं लाना । इसलिये जो श्रद्धा भक्ति से भगवान को साष्टांग प्रणाम करता है, उसके कष्ट, दुःख भगवान अवश्य दूर करते हैं । निष्कुलानन्द स्वामी ने लिखा है -

तमारा प्रताप थकी मूको मुखे वेद भणे,

तमारा प्रताप थकी रंक ते राजा बने.
तमारा प्रताप थकी पांगणो पर्वत चढे,
तमारा प्रताप थकी अंधने आंख्यो जडे.

ऐसा प्रबल प्रताप भगवान के चरण में वंदन करने का है। अब आगे हम आरती का तीसरा पद बोलते हैं -

नारायण नर भ्राता, द्विज कुल तनु धारी,
पामर पतित उधार्या, अगणित नरनारी... प्रभु !

मित्रो ! बद्रिकाश्रम में दुर्वासा ऋषि के श्राप के बहाने नरनारायणदेव द्विजकुल अर्थात् धर्मदेव के यहाँ प्रगट हुए। साक्षात् परमात्मा का मुख्य कार्य "पामर पतित उधार्या" कितने ? दो, तीन, चार, पांच, पचीस नही "अगणित नरनारी" अपने देश में जब विदेशियों का अंग्रेजी शासन आया तब अंग्रेजो ने एक पुस्तक लिखी । उसमें अनेक प्रकार की नोंट लिखी है । स्वामिनारायण भगवान को उनकी उपस्थिति में ही उन्हें भगवान मानकर लिखा है । क्योंकि उस समय पूजा, आरती, भक्ति करने वाले करीब पांच लाख परिवार थे। "अगणित नरनारी" अंग्रेजो को भी अंदाज आ गया कि पांच लाख परिवार स्वामिनारायण को भगवान मानने वाले हैं। भजन करने वाले है। पूजन करने वाले हैं। इसके अलावां जो पामर पतित हों वे भी आपकी शरणागति में आते हैं।

जिस प्रकार कोई डोक्टर नया औषधालय खोले तो दो... चार लोगों से कहेगा कि कोई अगल-बगल में विमार हो तो ले आइये। हम दवा कर देंगे। मैं फर्स्ट क्लास पास हूँ। अब वह जो भी मिलता सभी को पकड़लाता था। चाहे उसे बुखार आता हो या पेट दूखता हो सर दूखता हो, सभी को लाने लगा। वह डोक्टर परेशान हो गया। उसने कहा थोड़ा जो कम विमार हो उन्हें ही लाना चाहिये। उत्तर में लाने वाले ने कहा डो. साहेब आप तो रोगी को ठीक करने की पढाई पढे हैं। आपका तो लक्ष्य मात्र रोगी को ठीक करना है। दवा खाना रोगियो के लिये खोले हैं न कि निरोगियों के लिये। इसी तरह परमात्मा भी जिसकी तरफ कोई नही देखता उसकी तरफ ही देखते है और अपनी शरणागति करलेते हैं।

सुरेन्द्रनगर के पास लींमडी गाँव में वाघरी जाति का सगराम रहता था। सभी उसे दुतकारते थे। उसे दूर रहने के लिये कहते थे। उसे कही से संमान नही मिलता था। उसे कोई चाहता नही था, लेकिन एक दिन भगवान स्वामिनारायण उसके घर पदार्पण किये। परमात्मा तो एक मात्र भाव के भूखे होते है। श्रद्धा की तरफ देखते हैं। प्रेम देखते है। वे जाती नही देखते। भगवान श्रीरामजीने भी यह नहीं पूछा कि तूं इन वेरों को धोई है या नहीं ? शुद्ध है या नहीं ? लेकिन उसका भाव उसमें भगवानने देखा और वेर खागये। वह सगराम भक्त वाघरी जाति का था इसलिये अछूत के रुप में समझ कर बहुत दूर रखा जाता था। उसे अस्पृश्य समझते थे। लेकिन प्रभु उसके कूएं पर पहुंच गये रात रुके। इसी प्रसंग पर ब्रह्मानंद स्वामीने लिखा है -

जेने घेर रजनी तमे जाम्या,
कोड हती एनी जात लडी,
ब्हाला पूछूं एक वातलडी।
ब्रह्मानंद कहे संशय थयो नहीं।
धन्य छे तमारी छातलडी,
वहाला पूछुँ एक वातलडी ॥

सगराम भक्त के यहाँ रहकर प्रभु कथा किये। ऐसे पामर तथा पतित जैसे लोगों को भगवान स्वामिनारायण ने शरणागति आने पर उनके दोष दूर करके, उनके हाथ पकड़कर उनका उद्धार किये। प्रेमानंद स्वामी ने लिखा है ०

बाह्य जाली ने काढी लीधो बारणे रे लोल,
नहिं तो वही जात क्यांय ने क्यां.

मित्रो ! आनंद आगया होगा। आरती की बाकी कथा आगे के अंक में बांचेगे। बोलो जय श्री स्वामिनारायण।

•

वरदान सच्चा कब होता है

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एकवार नारदजी एक गाँव में गये। गाँव में एक मुमुक्षु उन्हें अपने घर ले गया । वहाँ नारदजी का स्वागत सत्कारकिया। बाद में उन्हें अपनी समस्या सुनाई।

हे नारदजी ! हमारे घर में अन्न, जल, धन, धान्य तथा अन्य संसार के सुख साधन है लेकिन संतान सुख नहीं है।

आप मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि संतान होजाय । नारदजी ने कहा, आप भक्त है, फिर भी इस विषय में भगवान से पूछना पडेगा । बाद में आपको बताऊँगा ।

नारदजी भगवान के पास पहुँच गये । हे भगवान ! हे दयालु ! हे वैकुंठपति नारायण ! आपसे एक प्रार्थना है । मैं आज एक सद्‌गृहस्थ के घर गया था, उसे पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देकर आ गया हूँ, उसे संतान हो ऐसा आप करियेगा । भगवानने कहा अरे नारद ! क्या करके आगये उसे सात जन्म तक संतान सुख नहीं है । इसलिये उसे जाकर कहदो कि संतान का योग नहीं है ।

नारदजी वापस गये और सद्‌गृहस्थ से कहे कि आपको सात जन्म तक संतान योग नहीं है । इसलिये भगवान की आप अब भजन कीजिये । संतान की आशा छोड दीजिए । उस समय यह सुनकर वह सद्‌गृहस्थ उदास हो गया ।

थोडे समय के बाद एक महात्माजी जंगल में से तप करके आ रहे थे । वे रागद्वेष रहित, तप व्रत युक्त, भक्ति निष्ठावाले थे । उन्हें खूब भूख लगी थी । वे गांव में आकर भोजन के लिये चिल्लाने लगे । जो आज मुझे जितनी रोटी खिलायेगा उसे उतनी संतान होगी । यह शब्द वह सद्‌गृहस्थ सुनलिया और अपने घर से तीन रोटी लाकर दिया । महात्माजीने उसे तीन संतान का आशीर्वाद दे दिया ।

समय वीतते उस गृहस्थ के घर महात्मा के आशीर्वाद से तीन बालक हुए । धीरे-धीरे वे बालक बड़े हुए । आंगन में वे खेल रहे थे, उसी समय नारदजी वहाँ आजाते हैं । नारदजी यह दृश्य देखकर बडे आश्चर्य में पड़ जाते हैं । यह क्या ? इस गृहस्थ के घर में तीन बालक खेल रहे हैं !!! बालकों को देखकर पूछे, आपके पिता कौन हैं ? इतन में एक बालक अपने पिताजी का हाथ पकड़ कर बाहर लाता है । नारदजी के आश्चर्य की सीमा न रही । उधर सद्‌गृहस्थ ने नारदजी से कहा आप के कथनानुसार रहा होता तो भगवान आज भी हमें संतान नहीं दिये होते । लेकिन एक महात्मा के आशीर्वाद से हमारे यहाँ तीन-तीन पुत्र हो गये ।

नारदजी तो क्रोधमें आ गये । पहुँच गये वैकुंठलोक । वहाँ जाकर कहाँ हैं लक्ष्मीपति ! कहा हैं नारायण ! ऐसा कहकर चिल्लाने लगे । आवाज सुनकर लक्ष्मीजी दौड़कर आयी । हाथ जोडकर कहने लगीं अरे नारद ! क्यों इतने व्यग्र दिखाई दे रहे हो ? प्रभु कहा है ? कोई बात नही, उनसे मिलना है ।

लक्ष्मीजी ! नारदजी को वैकुंठपति नारायण के पास ले गयीं । वैकुंठपति नारदजी को देखकर और अधिक अस्वस्थ होने का देखाव करने लगे । नारदजीने भगवान से पूछा, प्रभु ? आपका यह दर्द कैसे दूर होगा ?'' मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ? तब प्रभुने कहा ''सच्चे भक्त का मस्तक मिलेगा तो ही यह दर्द मिटेगा । नारदजी धरती पर गये । घूम-घूम कर भक्तों को मिलने लगे और कहते कि प्रभु को दर्द हो रहा है कोई मस्तक काटकर दे तो दर्द खत्म हो जायेगा । लेकिन कोई तैयार नहीं हुआ .

नारदजी घूमते हुए उसी महात्मा को मिल गये जो सद्‌गृहस्थ को संतान का आशीर्वाद दिये थे । नारदजीने उन्हें बताया, सुनते ही वे महात्मा तैयार हो गये । इतने में वैकुंठपति नारायण वहाँ आ गये । नारदजी विचार में पड़ गये कि यह सब क्या हो रहा है । भगवान ठीक होकर यहाँ आगये । थोड़ा नाराज होकर भगवान से कहने लगे कि आप कैसी लीला कर रहे हैं । प्रभुने कहा हे नारद ! आपको परेशान होने की कोई जरुरत नहीं है ।

जो महात्माजी मेरे लिये मस्तक देने को तैयार है, उन्हीं के आशीर्वाद से उस सद्‌गृहस्थ के घर तीन संतान हुई हैं । यद्यपि आपका मस्तक था तो भी आप धरती पर दूसरे का मस्तक खोजने आये । नारदजी यह सुनकर कहने लगे हाँ प्रभु वात सत्य है । प्रभुने कहा ये संत भाग्य की रेखा को भी बदल सकते हैं । इस में मैं कुछ भी नहीं करता । इसलिये मैंने आपसे मना किया था । नारदजी सब समझ गये ।

भक्तों ! श्रीहरि वचनामृत में कहे हैं कि भगवान के अनन्य भक्त हों तो उनसे क्या नही हो सकता ? वे मस्तक भी कटा सकते हैं । ब्रह्मानंद स्वामी ने कीर्तन में लिखा है -

''स्थिर मन मतवाली थई ने,
चाली हूँ तो शिर कर मां लईने, लाग्यो मारे ।''

ऐसे भक्तों में आभ्यन्तर शक्ति होती है । जैसा आपने इस कथानक में देखा है ।

भक्ति सुधा



यत्र - तत्र - सर्वत्र घनश्याम ही घनश्याम

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अमदावाद)

अयोध्या पुरी के सभी मंदिर बाल घनश्याम महाराज से अछूते नहीं थे, उसमें भी राम जन्म भूमि का मंदिर तथा हनुमान गढी का मंदिर बहुत प्रिय था। वे वहाँ प्रतिदिन दर्शन करने जाते। कथा सुनने के लिये बैठते तथा भजन-कीर्तन में भाग लेते।

एकबार वे हनुमान गढी में दर्शन करने गये थे, उस समय वहाँ रामायण की कथा चल रही थी, घनश्याम प्रभु तो एक तरफ कथा सुनने के लिये बैठ गये। रात होने लगी, लेकिन घनश्याम अभी भी घर नहीं आये, इस लिये भक्ति माता रामप्रतापभाई को घनश्यामजी को खोजने के लिये भेंजी।

रामाप्रतापभाईने हनुमान गढी में घनश्याम को देखकर धीरे से कहा "घनश्याम ! घर चलो, मां बुला रही है। घनश्यामने कहा कथा पूरी हो जाय बाद में आता हूँ, तब तक आप दूसरी जगह दर्शन करके आइये।

रामप्रतापजी दूसरे मंदिर दर्शन करने गये। वहाँ भागवत की कथा चल रही थी। देखे तो वहाँ भी घनश्याम एक कोने में बैठे थे और एकचित्त से कथा सुन रहे थे। बड़े भाई को आश्चर्य हुआ कि घनश्याम मुझ से पहले यहाँ कैसे आगये ? उन्हें हनुमान गढी में देखकर आ रहा हूँ। परंतु ये घनश्याम ही हैं यह स्पष्ट होते ही, पास जाकर कान में धीरे से कहे "चलो घर, मां बुला रही है। घनश्याम ने कहा यह कथा पूर्ण होते ही, आता हूँ। रामप्रतापभाई ने कहा ठीक है, तब तक शिवजी का दर्शन करके आता हूँ। ऐसा कहकर वे शिव मंदिर में गये। वहाँ देखे तो शिवपुराण की कथा चल रही थी, वहाँ भी घनश्याम एक कोने में बैठकर एकचित्त से शिवपुराण की कथा सुन रहे हैं।

रामप्रताप के आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही। घनश्याम हम से पहले यहाँ कैसे आगये ? वे घनश्याम के पास जाकर कान में धीरे से कहे, घनश्याम ! घर चलो, देर हो गयी है, मां बोलाती है। घनश्यामने कहा बडे भाई आप हनुमान गढी चलिये वहीं मैं आता हूँ। बड़े भाई दौड़ते हुए हनुमान गढी गये। उन्हें ऐसा था कि घनश्याम मुझसे पहले कैसे पहुँच सकते है ?

रामप्रतापभाई हनुमान गढी जाकर देखे तो कथा पूर्ण होने वाली थी। वहाँ जिस जगह पर पहले घनश्याम को देखे थे वहीं पर अभी भी एक चित्त कथा सुनते देखे। रामप्रतापभाई तो अवाक् रह गये। क्या यही घनश्याम सर्वत्र व्याप्त हो गये है। इतने में राम कथा पूर्ण हो गयी। बाल घनश्याम हनुमानजी को प्रणाम करके बडे भाई के पास आये। चलिये बड़े भाई घर चले। बड़ेभाई अवश्य, लेकिन उम्र में छोटे घनश्याम महान चमात्मकारिक प्रभु अंगुली पकड़कर घर आये। रास्ते में उन्हें हनुमानगढी कृष्ण मंदिर, तथा शिव मंदिर में एक ही साथ तीन जगह कथा सुनते घनश्याम ही थे, तो मेरे साथ कौन चल रहा है।

ऐसी बाल घनश्याम की बाल लीला थी। यहाँ भी घनश्याम वहाँ भी घनश्याम, सर्वत्र घनश्याम ही घनश्याम।

●

स्वरूप निष्ठा

- भगवतीबहन कांतिलाल सोनी (पाटण-उ.गु.)

आत्मानंद स्वामी बहुत बड़े संत थे। महाराज की आज्ञा में समर्पित थे। स्वयं वे ११७ वर्ष तक जीवित रहे। बागड गाँव का पानी उन्हें अनुकूल रहता, इसलिये वे वहीं रहते थे। एकवार वे जूनागड मंदिर में दर्शन करने गये। उस समय वहाँ की सम्पूर्ण व्यवस्था गुणातीतानंद स्वामी सम्हालते थे। आत्मानन्द स्वामी को देखकर गुणातीतानंद स्वामी खूब प्रसन्न हुए। वैसे गुणातीतानंद स्वामी समर्थ संत थे। महाराज

का उन्हे सतत प्रत्यक्ष दर्शन होता रहता था । स्वामी कुशलक्षेम पूछकर सत्कार के साथ बैठाये और पूछे कि स्वामी ! आपके इतने लम्बे समयतक इस लोक में दीर्घायु भोगने में क्या कारण है ?

तब आत्मानंद स्वामीने कहा "इस विषय में कुछ नहीं जानता, आपही बताइये । तब गुणातीतानंद स्वामी बोले श्रीजी महाराज को आप बहुत प्रिय हैं तथा उनकी आज्ञा का निष्ठा से पालन करते हैं । महाराज ऐसा जानते हैं कि आत्मानंद स्वामी हमें बहुत प्रिय हैं । मेरी मूर्ति के बिना नही रह सकते हैं । इसलिये वे आपकी शरीर को यहाँ रखे हैं। अब जैसा हम कहें वैसा आप कीजिये । आपके भीतर जो रुप दिखाई दे रहा है । वही बाहर भी है, वही अक्षरधाम में भी ऐसा भाव आप करिये तो महाराज आपकी शरीर छोडे और आप अक्षरधाम में जांय । यह सुनकर आत्मानंद स्वामी का जो शरीर सम्बन्धित महाराज से प्रेम था उसका यथार्थ ज्ञान हुआ । बाद में गुणातीतानंद स्वामी से कहने लगे गुरु ! ऐसा वात आप कभी नहीं कहे थे । तब स्वामीने कहा, यह वात मैने महाराज की आज्ञा के अनुसार कही है । यह सुनकर बहुत प्रसन्न हो गये । इसके बाद दो दिन रुककर बागड गाँव आये । कुछ ही दिन के बाद उनकी शरीर छूट गयी और महाराज विमान में बैठाकर उन्हे अक्षरधाम ले गये ।

इसलिये प्रत्येक हरिभक्त को स्वरुप निष्ठा होनी आवश्यक है । किसी भी प्रकार से इसमें बन्धन नहीं आने देना चाहिये ।

•

भजन करे वह जीते

- संतोकी निमिषा के. (मेथाण)

वजन करे ते हारे मनवा, भजन करे ते जीते ।
तुलसीदास थी तोल करो तो, बने पवन पर पोटो ।
मूको हिमालय हेमनो तो, मेरुथी बने मोटो ।
आ भारे हलवा हरिवर ने, मूलववो शी रीते ।
भजन करे ते जीते ..... ॥

किसी कविने कहा है कि जो वजन करता है वह हारता है और जो भजन करता है वह जीतता है । भोजन नही लेकिन भजन अधिक करनी चाहिये । प्रभु भक्त के प्रेम के वशीभूत हो जाते हैं । प्रभु की भजन निष्कपट, निःस्वार्थ भाव से की जाय तो प्रभु अवश्य वश में हो जाते हैं । भक्त जैसा चाहे वैसा वे करते हैं । यह मात्र भजन का ही प्रताप है ।

इतिहास में बोडाणा भक्त हो गये हैं । इनकी भगवान मेंइतनी अधिक निष्ठा हो गयी थी कि वे तुलसी के पत्र से भी प्रभु को तोल सकते थे । उस समय प्रभु भी हवा से भी हल्के हो जाते थे । जब कोई अभिमान करता तो भगवान मेरु पर्वत से भी अधिक वजन वाले हो जाते थे । जब भगवान घर पधारते तो गाजे बाजे के साथ स्वागत करते थे । इसी तरह सभी को करना चाहिये । जिससे अपना लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति साध्य हो जाय । जिसके लिये यह शरीर मिली है वह सार्थक हो जाय । इस संसार के मोह-ममता के जाल से छूटकर परमपद प्राप्ति के लिये सतत विचार करते रहना चाहिये । प्रभु की प्राप्ति का एकमात्र उपाय प्रभु की भक्ति है । प्रभु में तल्लीन होकर भजन करनी चाहिये । भजन करने से भगवान वश में होते हैं । भगवान भक्तवत्सल हैं । सदा एक ही वात का ध्यान रखना चाहिये कि प्रभु की भजन सदा बढती रहे, वजन घटता रहे । वजन करे वह हारे भजन करे वह जीते इस उक्ति का सदा ध्यान करते रहना चाहिये।

पृष्ठ १२ का चालु...

नीति सिखाकर चारसो संतो को सुरत प्रेषित कर दिये ।

रात्रि में सेवको के साथ बैठे हुए श्रीहरि थोड़ी उदासीनता के साथ बोले । अपना कुछ चला नहीं । मजबूरी में संतो को सूरत भेंजना पड़ा । पार्षदो ने कहा हे महाराज ! आप समर्थ हैं । आपकी इच्छा के विना कुछ नहीं होता । फिर भी आप इस तरह कहते हैं ? आप आज्ञा कीजिये । आपके लिये तथा आपके संतो के लिये शरीर समर्पित है । श्रीहरि ने कहा हे पार्षदो ! आप सभी अभी धीरजधारण करो । वीरपुरुष की पहचान समय आने पर होती है । लाखों श्रृंगाल के टोले में एक सिंह घबडाता नहीं है । क्षत्रिय, सिंह तथा सर्प ये तीनों में एक गुण है कि वे प्रथम किसी पर वार नहीं करते, यदि कोई करता है तो उसे छोड़ते भी नहीं । इस तरह प्रासंगिक वातें करके रात्रि काफी वीत चुकी है इसलिये आप सभी जाकर सोजाइये । *(क्रमशः)*



??? प्रश्न पेटी ???

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ पर्वतभाई एक दिन मानसी पूजा कर रहे थे। मानसी पूजा करते हुए उनके मन में संकल्प हुआ, वह संकल्प क्या था ?

प्रश्न : २ मनडुं मूरतिमां वडगी रह्युं रे, छाती उपडती अति चोपती रे।
क्यारे हवे भुज भरी बाथ भराय, मनडुं मूरतिमां वड़गी रह्युं रे॥
इस कीर्तन के रचयिता कौन ?

प्रश्न : ३ स्वामिनारायण भगवान कुछ कहे विना गढपुर से वडताल जाने की तैयारी करने लगे। महाराजने माणकी को मंगाया लेकिन माणकी चलने को तैयार नहीं हुई। दरबार तथा घुड़सवार सभी कहने लगे महाराज ! आज माणकी ऐसा क्यों कर रही है ? तब किस नंद संतने इसका निरुपण अपने शब्दों में किया ?

प्रश्न : ४ निष्कुलानंद स्वामी रचित "भक्तिनिधि" शास्त्र निष्कुलानंद स्वामीने कब पूर्ण किया ? इसमें कितने सोरठे, दोडे, कडवा, पद हैं ?

प्रश्न : ५ शरीरनो रोग औषधहरे छे, तो मननो रोग ..... हरे छे ?

प्रश्न : ६ शिक्षापत्री में श्रीजी महाराजने अपने हाथों से लिखा है तथा कहा भी है, किसका ध्यान कनरा ठीक नहीं हैं ?

प्रश्न : ७ अक्षरधाम के अधिपति अक्षरधामी अवनी ऊपर स्वामिनारायण भगवान पधारे उस समय अपने हाथों से नव मंदिरों की स्थापना की, वे नव मंदिर कौन हैं ?

मई २००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम।

(१) सभी साधन की अपेक्षा वासना टालना उत्तम साधन है। (२) मोह के उदय होने में आसक्ति कारण है। (३) अनंत प्रकार के पाप हैं लेकिन भगवान के भक्त को भगवान के सिवाय अन्यत्र प्रेम करना सबसे बड़ा पाप है। (४) वैराग्य, स्वधर्म, तप तथा नियम इन चार साधनों से इन्द्रियों को जीता जा सकता है। इसके अलावां भगवान के माहात्म्य के साथ नवधा भक्ति द्वारा मन जीता जा सकता हैं। (५) अपने इष्टदेव के जन्म से लेकर शरीर छोड़ने तक के लीला चरित्र वाले शास्त्र से सम्प्रदाय की पुष्टि होती है, वह शास्त्र संस्कृत में हो या प्राकृत में हो लेकिन उसी से संप्रदाय की पुष्टि होती है। (६) प्रभु के अलावां अन्यत्र कहीं सुख नहीं है ऐसा जो जाने, प्रभु की इच्छा के अनुसार वर्तन करे, वही प्रभु का शरणागतजीव कहा जायेगा। वही प्रभु का अनन्य भक्त कहा जायेगा। (७) भगवान की आज्ञा का जो पालन करे उसी पर भगवान प्रसन्न होते हैं।

१. सांख्ययोगी मंजुबा तथा भारतीबा (अहमदाबाद गादीवालाजी की हवेली)
२. विष्णुभाई जीवाभाई पटेल (सीतापुर)
३. चंद्रिकाबहन इन्द्रवदनभाई पटेल
४. हरगोवनभाई चतुरदास पटेल (मोटप)
५. चंद्रिका प्रगति टांक (जीरागढ)
६. भगवानजीभाई वेलजीभाई सोनी (मोरबी)
७. देवीबहन आर. दबासिया (मीरजापर-कच्छ)
८. वर्षाबहन अरविंदभाई सोनी (मेमनगर)
९. मेघाबहन कमलेशकुमार पटेल (कुहा)
१०. कैलाश बहन विष्णुभाई पटेल (नांदोल)
११. छायाबहन जे. पटेल हंसाबहन एच. पटेल (दहेगाम)
१२. शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
१३. टींटू, रिंकू तथा पूजा (मारुसणा)
१४. कांताबहन सोमाभाई पटेल थता दिव्यांग पटेल (मारुसणा)
१५. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी (अमदावाद)
१६. संदीप राजेशभाई भक्तिभाई पटेल (झुलासण)
१७. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल (झुलासण)
१८. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल
१९. ज्योत्सनाबहन राजूभाई पटेल (आनंदपुरा)
२०. घनश्याम राजूभाई पटेल (आनंदपुरा)
२१. मेनाबहन डाह्यालाल (जासलपुर)
२२. मेनाबहन महेन्द्रभाई सोनी (नरोडा)
२३. गोरधनभाई शंकरदास पटेल (सोजा)
२४. रेखाबहन कीर्तिकुमार पटेल (ऊंझा)
२५. हेमांगी कीर्ति चोटलीया (बीलीमोरा)
२६. माधवजीभाई हरखजीभाई आद्रोजा (मोरबी)
२७. विनोदभाई पूंजाभाई पटेल (वहेलाल)
२८. रक्षा, पूजा, वनिता (मारुसणा)
२९. दिव्यांग, प्रयाग, कौशल (मारुसणा)
३०. नटवरभाई जे. पटेल, रमेशभाई आई. पटेल (मारुसणा)
३१. सुमित्राबहन नरेशकुमार भावसार (विसनगर)
३२. अरविंदाबहन नरेशभाई भावसार (चांदलोडिया)
३३. वीणाबहन आर. भावसार (नवरंगपुरा)
३४. माणेकबहन मणीलाल पटेल (दहेगांव)
३५. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल (दहेगांव)
३६. बाबूलाल पी. भावसार (अहमदाबाद)
३७. साकरबहन नटवरलाल पटेल (नांदोल)
३८. समस्त भाईलोग (श्री स्वामि. मंदिर बहनोका मोखासण)
३९. प्रफुलाबहन एस. पटेल (उवारसद)
४०. भावना कमलेशकुमार खंधडिया (मोरबी)
४१. कंचनबहन बाबूभाई पटेल (रजनपुर)
४२. एक हरिभक्त
४३. रंजनबहन डी. पाटडीया (नवरंगपुरा)
४४. करशनभाई जोइताराम पटेल (कोणावाला)
४५. अमृतलाल के. मोदी (सोजा)

सत्संग समाचार



श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण

सर्वोपरि इष्टदेव भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी की शुभ प्रेरणा से श्री धनजीभाई कानजीभाई मिस्त्री परिवार की तरफ से सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव भगवान की प्रसन्नता के लिये प्रसादी की दिव्य सभा मंडप में वैशाख शुक्ल-१ ता. ६-५-०८ से वैशाख शुक्ल-८ ता. १२-५-०८ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण युवान शा. स्वामी धर्मकिशोरदास (प्रयागराज मंदिर के कोठारी) के वक्तापद पर सुमधुर शैली में सम्पन्न हुआ । प्रातः सायं दोनो समय वक्ता महोदय के कंठ से सुनने के लिये श्रोतागण मंत्र मुग्धरहते थे । १२-५-०८ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से व्यासजीकी आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति की गई थी । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आरती यजमान परिवारने उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

प.पू. बडे महाराजश्रीने वक्ताजी के कथा शैली की प्रसंशा करके आशीर्वाद दिया था । श्रीहरिनाम स्मरण के साथ कथा की पूर्णाहुति हुई थी । *- कल्पेश पटेल*

प.पू. लालजी महाराजश्री का क्रिकेट मैच

बोपल मंदिर के तीसरे पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री बोपल की बाल सभा में पधारकर बालकों की सत्संग प्रवृति की तरफ ध्यान देने के लिये स्वयं बालकों के साथ बाल क्रीडारुप क्रिकेट मैच ता. १८-५-०८ रविवार के दिन टर्फ स्कूल के प्रांगण में खेलने का आयोजन किया गया था । जिस में प्रातः ७-३० से १२-०० बजे तक क्रिकेट चला था । पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से बोपल की बाल सभा की टीम विजयी हुई थी । पू. लालजी महाराजश्री भी अपने दादा बाल घनश्याम प्रभु की बाललीला का तादृश दर्शन इस बाल क्रीडा के माध्यम से कराकर सभी को आनंदित किये थे ।

श्रीजी महाराज के आठवें वंशज पू. लालजी महाराज में श्रीजी महाराज के जैसे गुण हैं । बोपल की टीम के बाल केप्टन राहुल को अपनी प्रसादी का बैट भेंट में देकर आशीर्वाद देते हुए आनंद व्यक्त किया था ।

इस क्रिकेट के समय पू. लालजी महाराजश्री की तरफ से सभी क्रिकेटरों के लिये नास्ता की व्यवस्था की गई थी । मैच कें समय श्रीराजा अपने भाई पू. लालजी महाराज के क्रीडा प्रेम को देखकर आनंद विभोर हो गयी थी ।

बोपल के कोठारीजी श्री अमृतभाई पटेल, श्री नटवरभाई वरिया, श्री प्रविणभाई उपाध्याय, (संचालक बाल सभा बोपल) श्री संजयभाई सोनी, वि. उपस्थित रहकर तथा पू. लालजी महाराजश्री के क्रिकेट क्रीडा का दर्शन करके आनंदति हुए थे ।

- प्रवीणभाई उपाध्याय

बोपल मंदिर में तृतीय पाटोत्सव सम्पन्न

प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव स्कीम कमेटी के सदस्य श्री रतीभाई खीमजीभाई पटेल बोपल में भव्य श्रीहरि मंदिर का निर्माण कराकर श्री नरनारायणदेव को समर्पित किये हैं । जिस मंदिर का तीसरा पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बोपल तथा अगल-बगल विस्तार के विशाल सत्संगी समुदाय की उपस्थिति में श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक, समूह महापूजा, अन्नकूट की आरती करके पू. लालजी महाराजश्रीने प्रासंगिक सभा में हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

बोपल मंदिर के शा.धर्मवल्लभदासजी तथा महंत शा. हरिवल्लभदासजी की शुभ प्रेरणा से गाँव मेडावाला श्री दलसुखभाई ठाकरशीभाई पटेल तथा उनके सुपुत्र कनुभाई एवं हर्षदभाई पाटोत्सव में यजमानपद का लाभ लिये थे ।

अग्रगण्य हरिभक्त श्री खीमजीभाई पटेल तथा श्री रतिभाई पटेल (मेडावाला) एवं श्री जगदीशभाई दरजी, श्री रतीभाई भावसार, को. श्री अमृतभाई पटेल इत्यादि अनेक हरिभक्त भाई-बहन उपस्थित थे । *- प्रवीणभाई उपाध्याय*

एप्रोच बापूनगर मंदिर में दिव्य बाल सत्संग शिबिर

बालकों में बाल्यावस्था से ही संस्कार दृढ हो इसके लिये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने प्रत्येक गाँवो में तथा शहरों में श्री घनश्याम बाल मंडल चलाने की श्री नरनारायणदेव युवक मंडल को आज्ञा की है । प.पू. महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से बापूनगर में विविधआठ स्थलों पर बाल

मंडल की साप्ताहिक सभा होती है।

ता. २७-४-०८ रविवार को प्रात: ७-४५ से दोपहर में ११-४५ तक प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में आठों शिबिरों की सभा हुई थी। कर्मशक्ति मंदिर के पाटोत्सव निमित्त अन्नकूट की आरती उतारकर प.पू. लालजी महाराजश्री एप्रोच मंदिर पधारे थे। एप्रोच मंदिर के श्री व्रजेन्द्र म्युझिक बैन्ड द्वारा ताल, धुन, कीर्तन के साथ प.पू. लालजी महाराजश्री का स्वागतोत्सव किया गया था।

बालकों द्वारा मंगलाचरण, धुन-कीर्तन तथा धार्मिक प्रश्नोत्तरी का सुंदर आयोजन जिसमें, स्वागत गीत, प्रार्थना, कौवाली सद्बोधक नाटक तथा रास किया गया था। इसके अलावां बालकों ने घनश्याम चरित्रवार्ता, व्यसन मुक्ति, प्रवचन, शिक्षापत्री श्लोक, वचनामृत वक्तव्य इत्यादि को मुखपाठ से प्रस्तुत किया गया था।

अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत स्वामीने श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले बापूनगर के तेजस्वी विद्यार्थियों को इनाम (पुरस्कार) दिया था। खूब बडी संख्या में बालक सत्संग शिबिर में भाग लिये थे। प.पू. लालजी महाराजश्री सभी बालकों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। शिबिर की सफलता में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। *- गोरधनभाई सीतापरा*

श्री नरनारायणदेव मंदिर माणसा में १३८ वाँ पाटोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से श्रीहरि के प्रसादी के श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा में विराजमान देवों का १३८ वां पाटोत्सव अभिषेक वैशाख शुक्ल-६ ता. १०-५-०८ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

इस प्रासंगिक कार्यक्रम के यजमान श्री केशवलाल रणछोडभाई पटेल तथा गं.स्व. धूली बहन केशवलाल पटेल परिवार के श्री रामाभाई, श्री भगाभाई, श्री विष्णुभाई, चि. संजयभाई, चि. राजेन्द्रभाई इत्यादि सभी ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

इसके बाद सम्प्रदाय के मूर्धन्य लेखक तथा सुप्रसिद्ध वक्ता शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी यहाँ के महंत घनश्याम स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी (माणसा) तथा पुजारी स्वामी ने प्रसंगोचित प्रवचन किया था। अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

-ईश्वरभाई

नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर में मारुति यज्ञ

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी एवं स्वा. देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव की प्रागट्य भूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित संकल्पसिद्धि को पूर्ण करने वाले श्री कष्टभंजनदेव की प्रसन्नता के लिये चैत्र शुक्ल-१५ ता. २०-४-०८ के दिन श्री हनुमान जयंती के शुभ अवसर पर मारुतियज्ञ का आयोजन किया गया था। सायंकाल ४-३० बजे प.पू. बडे महाराजश्री के वरद हाथों से पूर्णाहुति की गई थी। इस अलौकिक दिव्य प्रसंग के दर्शन का लाभ लेकर सभी नरनारी धन्य हो गये। श्री हनुमानजी के मंदिर के कलर की सेवा अ.नि. हीराबहन गणपतलाल मोहनलाल भावसार (श्रीजी परिवार) ने की थी। *- पुजारी स्वामी*

वडनगर

वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चैत्र कृष्ण-११ के दिन महंत स्वामी हरिसेवादासजी की प्रेरणा से हरिभक्तों ने १२ गंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की थी। शा.स्वा. नारायणवल्लभदासने श्री घनश्याम महाराज की आरती करके धुनकी पूर्णाहुति की थी। इस प्रसंग पर हरिभाई शामलदास मोदीने भक्तोंको प्रसाद (भोग) खिलाकर तृप्त किया था। *- मोदी हर्षदभाई एस.*

उमेदगढ (ता. ईडर) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत स्वा. जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में रजत जयंती महोत्सव का सुंदर आयोजन ता. २५-४-०८ से २९-४-०८ तक किया गया था। जिसके उपलक्ष्य में श्रीहरियाग, महापूजा, श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण के वक्ता शा.स्वा. हरिजिवनदासजी तथा संहितापाठ में स्वा. मुक्तजीवनदासजी थे। इस प्रसंग पर समस्त धर्मकुल के पदार्पण करने से हरिभक्तों को महासुख की प्राप्ति हुई थी। प.पू. बडे महाराजश्री जब इस प्रसंग पर पधारे उस समय संत-हरिभक्तों ने स्वागत पूजन करके श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये यथा योग्य सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा प.पू. श्री गादीवालाजी के पधारने से महिला वर्ग को दर्शन एवं आशीर्वाद का दिव्य लाभ मिला था।

ता. २९-४-०८ के दिन पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे उस समय भव्य शोभायात्रा निकाली गई थी। इस प्रासंगिक सभा में हरिभक्तों ने प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजका पुष्पहार से पूजन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने मंदिर में विराजमान ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी को दर्शन का लाभ दिया था।

यजमान परिवार को मंदिर की तरफ से चित्र प्रतिमा भेंट में दी गयी थी। सभा संचालन स्वा. आनंदजीवनदासजीने किया था।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद में सभी को श्री नरनारायणदेव का दृढ आश्रय रखने की आज्ञा की। इस

प्रसंग पर अहमदाबाद, सोकली, टोरडा, प्रांतीज तथा मूली से संत पधारे थे । सापावाडा के महंत सत्यसंकल्पदासने सुंदर आयोजन किया था। *- शा. आनंदजीवनदास*

अरोडा (घनश्यामपुरा - इडर देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से तथा सापावाड के महंत स्वामी के मार्गदर्शन में मंदिर का रजत जयंती महोत्सव ता. २७-४-०८ से ता. १-५-०८ तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा महंत) के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत पंचाह्न पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था । संहिता पाठ में स्वा. भक्तिवल्लभदासजी विराजमान थे ।

पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय संत-हरिभक्तोंने खूब उत्तम स्वागत किया था । जिससे शोभायात्रा पुराने अरोडा से गाँव में मंदिर तक गयी । वहाँ मंदिर में महाराजश्री ठाकुरजी की आरती उतारकर, यज्ञ की पूर्णाहुति करके सभा में पधारे थे । सभा में यजमान श्री मोहन भगत तथा जेसंगभाई परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

सभा संचालन स्वा. छपैयाप्रसाददासजीने किया था । हरिभक्त अनुशासनिक ढंग से प.पू. महाराजश्री का पुष्पहार से स्वागत करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

अंत में प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए बताया कि श्री नरनारायणदेव को जो छोड़कर अन्यत्र गया उसका कल्याण रुक गया । कल्याण तो एकमात्र श्री नरनारायणदेव के आश्रय में हैं । उन्हीं का दृढ आश्रय रखने में सभी का श्रेय हैं। *- शा. छपैयाप्रसाददास*

बालवा गाँव में अमृत महोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वर्षो पूर्व यहाँ के मंदिर का जीर्णोद्धार अ.नि. शा.स्वा. केशवचरणदासजीने करवाया था । जिस मंदिर को ७५ वर्ष पूर्ण होने पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर) तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २७-४-०८ से ता. ३-५-०८ तक अमृत महोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था । जिसका शुभारंभ शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा अग्रगण्य हरिभक्तोंने दीप प्रज्वलित करके किया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में भागवत सप्ताह पारायण शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा मंदिर) के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ । त्रिदिनात्मक महाविष्णुयाग तथा बहनों के मंदिर में श्री गणपतिजीकी प्राण प्रतिष्ठा विधिइत्यादि का आयोजन किया गया था। ता. ३-५-०८ की प्रातः प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आगमन पर स्वागत करके भव्यातिभव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया था । जिस में महाराजश्री विराजमान हुए थे उस दिव्य रथका दर्शन करके भक्तजन अलौकिक सुख प्राप्त किये थे । सर्व प्रथम प.पू. आचार्य महाराजश्री दोनो मंदिर में ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभा में कथा की पूर्णाहुति की आरती उतारे थे । यजमान परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था । इसके बाद संतो का पूजन किया गया था । संतोने प्रेरक वाणी में प्रवचन किया । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को आशीर्वाद दिया था । अंत में बहनों के मंदिर में श्री गणपतिजी की प्रतिष्ठा करके पूर्णाहुति की आरती उतारते थे । इस प्रसंग पर जेतलपुर अक्षर महोलवाडी के संत तथा अहमदाबाद, छपैया एवं जमियतपुरा से संत पधारे थे ।

इस महोत्सव में सभा संचालन शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (गुरु पी.पी. स्वामी) ने किया था। *- महंत के.पी. स्वामी, जेतलपुर*

श्री स्वामिनारायण मंदिर ऊँझा में (सर्वोदय ट्रस्ट) सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ ऊँझा के श्री स्वामिनारायण मंदिर में अ.नि. श्री पटेल हरगोवनदास शिवरामदास पालडीया के स्मरणार्थ गं.स्व. रईबहन के संकल्प से ता. १२-५-०८ से ता. १८-५-०८ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पी.पी. स्वामी के वक्तापद पर सुमधुरवाणी में कथामृत का रसपान हुआ ।

इस प्रसंग पर पूर्णाहुति के समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारी गई । बाद में सभा में पधारे थे । सप्ताह पारायण की पूर्णाहुति करके समस्त सभाजन को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । इस प्रसंग पर नाना धाम से संत पधारे हुए थे।

यजमान परिवार तथा अमृतभाई माधवदास पांचोटिया इत्यादि सभीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था ।

- रामजीभाई पटेल

मेघाणीनगर में रात्रि कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बडी गादीवालाजी एवं प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद से यहाँ के सत्संगी बहनो के शुभ संकल्प से छोटे पी.पी. स्वामी (कोटेश्वर गुरुकुल) की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव की प्रसन्नता हेतु ता. २८-४-०८ से ता. ४-५-०८ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर बडी संख्या में हरिभक्तों ने कथाश्रवण का लाभ लिया था ।

- बलदेवभाई पटेल

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर श्रीजीनगर (हलवद)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का ११ वां पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धूमधाम के साथ सम्पन्न किया गया । इस प्रसंग पर मूली मंदिर के महंत धर्मवल्लभदासजी इत्यादि संत पार्षद मंडलने ठाकुरजी की पाटोत्सव आरती करके मंदिर पर ध्वजा चढाया था । संतोने श्री राधाकृष्णदेव तथा श्री नरनारायणदेव की दृढ निष्ठा रखने तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहने के लिये सूचन किया था । इस प्रसंग पर हरिभक्तोंने बडी संख्या में उपस्थित होकर लाभ लिया था । *- मोरी मगनभाई*

मालवडगाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजीकी प्रेरणा से एवं स्थानिक भक्तों के अथक परिश्रम से ता. १३-५-०८ से ता. १७-५-०८ तक भव्य मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर पंच दिनात्मक पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ । त्रिदिवसीय श्रीहरियाग का भी आयोजन किया गया था । ता. १७-५-०८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई । इस प्रसंग पर नाना धामों से संत पधारे हुए थे । समग्र सभा का संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी (सुरेन्द्रनगर) ने किया ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कलिवलेन्ड (अमेरिका) में अपनी सेवा संस्था द्वारा फ्रि मेडिकल केम्प सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा से अमेरिका में अपनी आई.एस.एस.ओ. संस्थापित "सेवा" संस्था की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर बढती जा रही है ।

१९ वीं अप्रैल शनिवार तथा २० अप्रैल रविवार को विकेन्ड में अपनी सेवा संस्था द्वारा कलिवलेन्ड ओहायो में स्ट्रोंग सवीले टाउन में फ्री मेडिकल केम्प का आयोजन किया गया था । आई.एस.एस.ओ. संस्था द्वारा समग्र अमेरिका में अपने १० वें मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर सेवा संस्था के प्रोफेसनल डाक्टर तथा मेडिकल संस्था द्वारा इस कोम्युनिटी हेल्थ फेर में अपने हेल्थ का ध्यान स्वयं देना चाहिये ऐसा निर्देश दिया गया था । कुल १५० जितने रोगियों को स्क्रीनिंग करके उनका वेइट, हाई ब्लड प्रेसर, सूगर, ब्लड सूगर, कोलोस्ट्रोअल तथा हिमोग्लोबीन इत्यादि का निदान स्पेश्यल डोक्टरों द्वारा किया गया था ।

आवश्यकतानुसार रोगियों को विना मूल्य की दवा भी दी जाती थी । ३० ब्लड प्रेसर मोनिटर्स, ४० ग्लुको मीटर तथा ४०० ग्लुकोमीटर टेस्टींग स्ट्रीप्स भी विना मूल्य दी गयी थी ।

सेवा संस्था अपने प्रत्येक मंदिर के पाटोत्सव में तथा न्युजर्सी, कोलोनिया, ह्युस्टन तथा बोस्टन मंदिर में स्थायी सेवा के लिये डॉ. स्वयं १५ दिन तक सेवा करते हैं । अभी तक सेवा संस्था के छोटे-बडे अनेक केम्प लग चुके हैं । जिसमें हजारों रोगियों की सेवा करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.असौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बडी गादीवालाजी के आशीर्वाद से अपना केम्प सफल होता जा रहा है । जिस में अपने हरिभक्त डोक्टरों की सेवा सराहनीय है । *- प्रवीणभाई शाह*

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

यहाँ २७ अप्रैल रविवार को सायंकाल ३-३० से ७-३० तक सवर्णापार्क कम्युनीटी सेन्टर के होल में भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया था । जिसमें श्रीहरि का प्राकट्योत्सव मनाया गया था । साथ ही में २३-४-०८ के दिन श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू. बडे महाराजश्री का प्राकट्योत्सव के शुभ अवसर पर तस्वीरकी आरती उतारी गयी थी ।

पूज्य श्री प्रफुल्लकुमार के अक्षरवास पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन की गयी थी । सतत ४ घंटे तक भजन-कीर्तन २७३ वचनामृत पाठ, थाल, आरती करके समूह में प्रसाद वितरण किया गया था ।

१९९१ वे में लोस एंजलस मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्री घनश्याम महाराजने अपर स्वरुप प.पू. बडे महाराजश्री का उत्तरीय वस्त्र पकड़ा था । इसी तरह कलिवलेन्ड मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर घनश्याम महाराजने श्रीहरि के सातवे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का उत्तरीय वस्त्र पकड़ा था । इस प्रसंगका वर्णन सभा में सभाजन सुनकर आश्चर्यचकित रह गये । इस प्रकार के दिव्य चमत्कारिक प्रसंग श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान पर होना सहज है एवं अलौकिक है ।

यहाँ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडेमहाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृति अच्छी चलती है । *- कनुभाई पटेल*

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलाइड बिल्डर्स सिसल्स टापू

यहाँ के सीसल्स टापू में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा भुज मंदिर के

संतो के मार्गदर्शन से यहाँ कच्छ के श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान हरिभक्त इलाइड बिल्डर्स ग्रुप का (श्री कुरजी रामजी ग्रुप) के आर.जी. ग्रुप केनिया, मोरेश्यस, रोड्रीग्झ तथा सिसल्स में कंस्ट्रक्शन तथा होटेल टुरिझम के व्यवसाय में खूब नाम प्रतिष्ठित हुआ है। फिर भी मूल संप्रदाय के मूल्य को भूले नहीं हैं। कभी कभी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री को आग्रह करके वहाँ बुलाते हैं। धर्मकुल का दर्शन-पूजन करके परम सुख की प्राप्ति करते हैं। यहाँ पर अपने छोटे-बडे कुल तीन मंदिर है। जहाँ पर प्रात: सायं संप्रदाय के नियमानुसार पूजा-पाठ, आरती होती रहती है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारकर हरिभक्तो को दिव्यलाभ दिये थे। अपने छोटे बडे सभी उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं।

अपना "श्री स्वामिनारायण मासिक" प्रति महीने जब पहुचता है तो श्रीहरि के अपर स्वरुप आचार्य महाराजश्री की प्रवृति तथा सत्संग की प्रवृति के विषय में प्रत्यक्ष अनुभव होता है। तीनो मंदिरों में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा मान्य शास्त्रों का पठन होता है।

यहाँ एलाइट बिल्डर्स ने अपना पाया आज से २८ वर्ष पूर्व डाला जो एक बट वृक्ष बन गया है। क्रिश्चियन टापू में ३५० जितने भारतीय मूल के काम करने वालों की संख्यावाले अग्रगण्य कम्पनी ने मूल संप्रदाय श्री नरनारायणदेव गादी का भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण कराकर सत्संगका बीजारोपण किया है। श्री कुरजीभाई राम ग्रुप के साथ यहाँ के एम.डी. श्री प्रवीणभाई इराडेनेभी खूब प्रसिद्धि प्राप्त की है। एलाईड बिल्डर्स द्वारा माहे प्राले तथा लाडीक टापू में भी अपने सुंदर हरि मंदिरों का निर्माण कराकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा संतो की प्रसन्नता प्राप्त की है। इस सुंदर टापू में मूल संप्रदाय के मंदिर से हरिभक्तों को भजन-कीर्तन का सुंदर सुख मिलता है। ऐसे हरिभक्तों को धन्यवाद।

- कुरजी रामजी ग्रुप मंदिर के मुख्य पुजारी नीतीनभाई जोशी

नडोला (झांबीया) सत्संग मंडल

नडोला झांबीया में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंडल के अपने हरिभक्तों द्वारा सभा का सुंदर आयोजन करके अपने मूल संप्रदाय के सिद्धांतो के अनुसार श्रीहरि का भजन-कीर्तन समूह में किया जाता है।

यहाँ प्रत्येक एकादशी को तथा अन्य उत्सवों के दिन सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है। श्रीहरि प्रागट्योत्सव तथा रामनवमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस दिन भजन-कीर्तन का आयोजन हुआ था। इसके बाद की सभा में शीघ्र कवि स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के १०० पद गाने का आयोजन किया गया था।

सत्संग सभा में श्री प्रफुल्लभाई सोनी, श्री रमणभाई पटेल, श्री कीरीटभाई पारेख, श्री जयेश पटेल, श्री ज्योतीन्द्रभाई सोनी, तथा पन्नाबहन आदि सभी हरिभक्त अपने परिवार के साथ आते हैं। सभा में २७३ वचनामृत, कीर्तन, भजन, नित्य-नियम, थाल आरती ठाकुरजी के समक्ष की जाती है। इसका नित्य आनंद सभी को मिलता है।

- जयेश पटेल

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव के उत्सव करने वाले प.भ. श्री नारायणदास व्रजलाल सोनी दि. २१-४-२००८ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है। वर्षो तक जिन्होने नरनारायण देव के समक्ष उत्सव करके श्री नरनारायणदेव को जीवन सोंप दीया था। उनके अक्षरवास से उत्सव मंडल में कमी हुई है।

माणसा : प.भ. गजराबहन अमृतलाल मोदी दि. २८-४-२००८ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

मेघाणीनगर : गं.स्व. अंबाबहन भवानभाई गोंडलिया दि. ९-३-२००८ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

नारणपुरा (ता. कडी) : प.भ. गोविंदभाई भुदरदास पटेल दि. १२-५-२००८ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

उवारसद : प.भ. विनोदभाई परसोत्तमदास पटेल दि. १६-५-२००८ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।








१. मूली मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के चंदन के वस्त्र में अलौकिक दर्शन ।
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा श्री राधाकृष्णदेव तथा हरिकृष्ण महाराज के पाटोत्सव पर अन्नकूट दर्शन ।
३. नाथद्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव के अवसर पर आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।
४. कोलोनीया (अमेरिका) के मंदिर में श्री नरनारायणदेव के फूलों के वस्त्र में अलौकिक दर्शन ।
५. महेसाणा में निर्माणाधीन शिखरबद्ध भव्य मंदिर की तस्वीर ।
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेघाणीनगर में रात्रि पारायण प्रसंग पर कथा श्रवण करते हुए भक्तगण ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08


1


2


3


4


5




6

(१) प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम के परिसरमें श्री महाविष्णुयाग की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री। (२) सर्वोपरि श्रीहरि को यज्ञ करना बहुत पसंद था तथा बड़े-बड़े विष्णुयाग कर हजारो ब्राह्मणो को भोजन करवाकर बड़ी दक्षिणा देकर प्रसन्न करते उसी प्रकार प.पू. बड़े महाराजश्रीने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के भव्य परिसर में महाविष्णुयाग का आयोजन कर स्वयं बिराजमान हुए तथा विप्रो को दक्षिणा देकर प्रसन्न किया इस अवसर पर दर्शन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री। (३) श्री स्वामिनारायण म्युझियममें श्री महाविष्णुयाग के अवसर पर रात्रि के कीर्तन भक्ति कार्यक्रम में अलौकिक दर्शन का सुख देते हुए श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूप। (४) सत्संग के भावि परिवार को सत्संग का विशेष पोषण मिले इसलिए प.पू. लालजी महाराजश्री ने अपनी टर्फ स्कुल में बोपल मंडल के बालको के साथ क्रिकेट मेच का आयोजन किया था। इस अवसर पर बालकों के साथ दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री। (५) जोडीया (मूली) गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के पुन: निर्माणका भूमिपूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (६) जीरागढ(मूली) श्री स्वामिनारायण मंदिर में "सर्वजीव हितावह महोत्सव" के अवसर पर श्री

(079) 26580916, 9879060686